ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास–मार्गशीर्ष–पौष संवत् 2071
दिसम्बर 2014

अंक 113, मूल्य 10

# अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

रामप्रसाद बिस्मिल

श्रद्धाञ्जलि
माता प्रेमलता शास्त्री

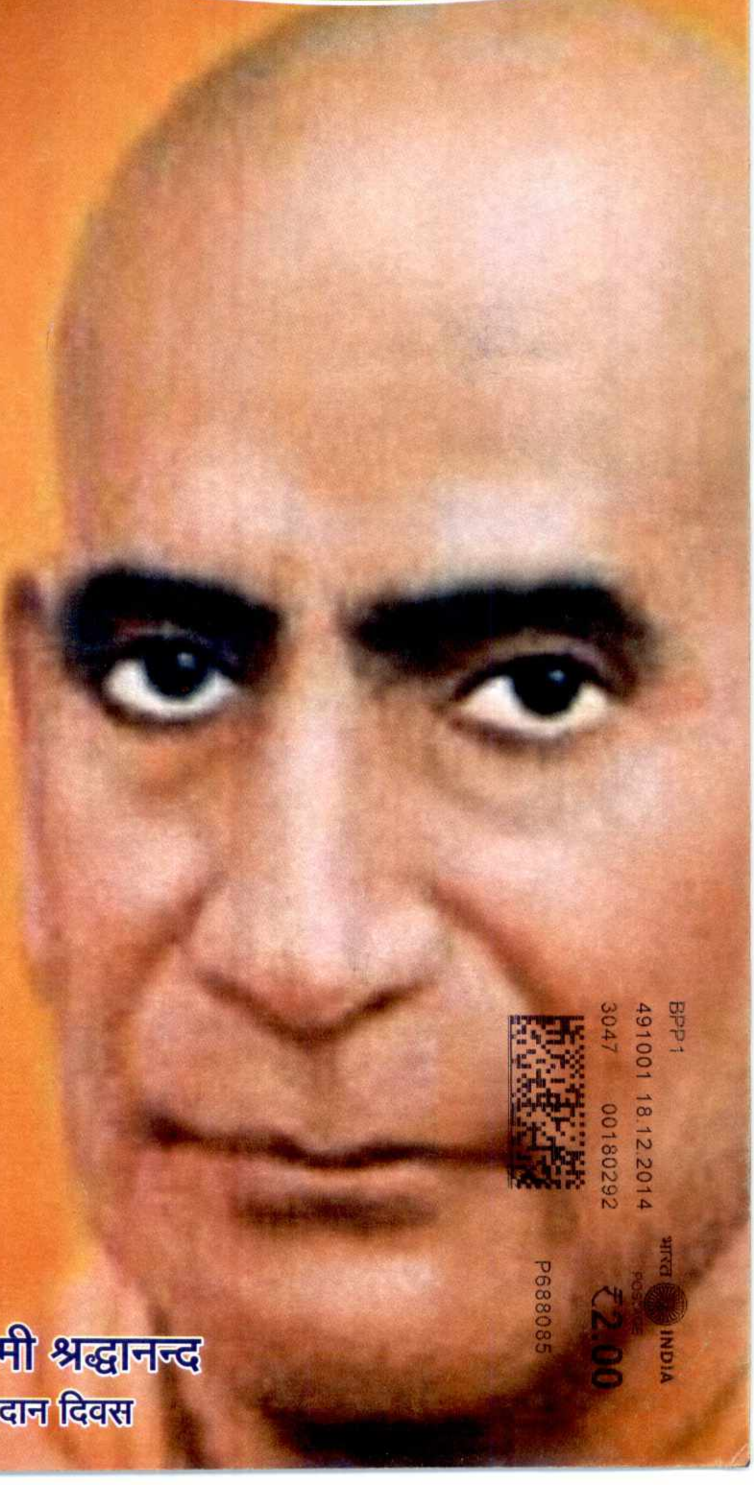

BPP1
491001 18.12.2014
3047 00180292
P688085
भारत INDIA POSTAGE ₹2.00

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द
23 दिसम्बर बलिदान दिवस

thearyasamaj.org

# छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले के विभिन्न स्कूलों व ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्न
## योग साधना चिकित्सा एवं चरित्र निर्माण शिविर की झलकियाँ

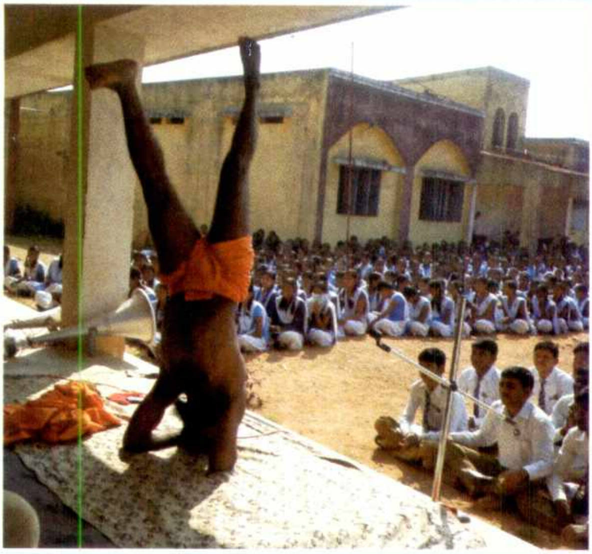

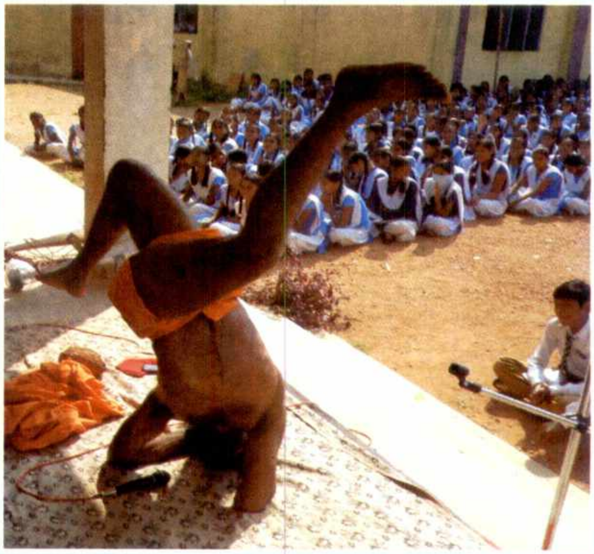

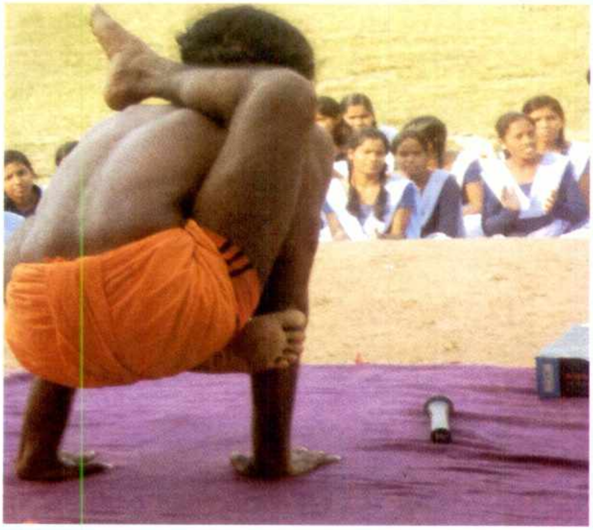

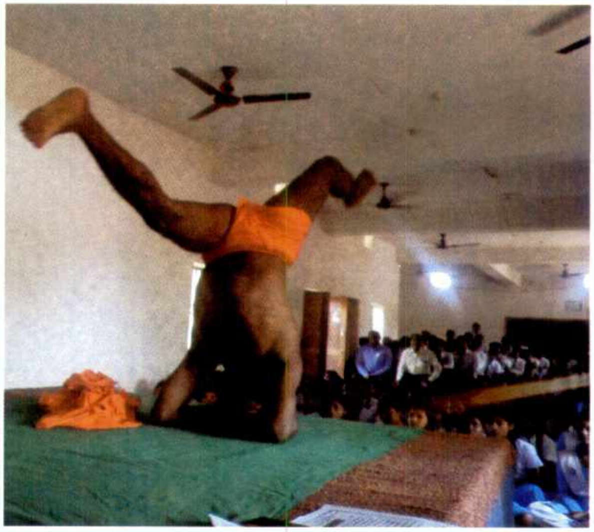

thearyasamaj.org

# अग्निदूत


हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष - १०, अंक ६ — ओ३म् — मास/सन् - दिसम्बर - २०१४

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१


श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।


: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com


वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

## विषय - सूची

पृष्ठ क्र.


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | वेदामृत : प्रजावद् ब्रह्म | स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार | ०४ |
| २. | सम्पादकीय : धुन के धनी, निर्भीक आर्यनेता-स्वामी श्रद्धानन्द | आचार्य कर्मवीर | ०५ |
| ३. | श्रेष्ठ मानव जीवन का आधार-वैदिक संस्कार | मनमोहन कुमार आर्य | ०८ |
| ४. | ढोंगी साधुओं के खिलाफ शंखनाद हो | डॉ. वेदप्रताप वैदिक | १० |
| ५. | व्यक्ति धर्म, राष्ट्र धर्म एवं अध्यात्म का उत्तम ग्रन्थ 'गीता' | प्रो. उमाकान्त उपाध्याय | १२ |
| ६. | एक मुलाकात स्वामी दयानन्द से | कन्हैयालाल आर्य | १५ |
| ७. | प्रणम्य-धर्मनिष्ठा | प्रो.सी.ए. राजकुमार | १९ |
| ८. | सिंगापुर से आचार्य ज्ञानेश्वरार्य | आचार्य ज्ञानेश्वरार्य | २२ |
| ९. | श्रद्धा से सुने सत्संग ने ही बनाया मुंशीराम से 'श्रद्धानन्द' | श्री विनोद बंसल | २४ |
| १०. | अमर शहीद - पं. रामप्रसाद बिस्मिल | श्री जगतराम आर्य | २६ |
| ११. | होमियोपैथी से कैंसर का उपचार | डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी | २८ |
| १२. | समाचार दर्पण | | ३१ |


सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

वेदामृत

# प्रजावद् ब्रह्म

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

वेदामृत

ब्रह्मा प्रजावदाभर, जातवेदो विचर्षण।
अग्ने यद् दीदयद् दिवि॥ ऋग्. ६.१६.३६

ऋषिः **बार्हस्पत्यः भरद्वाजः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(विचर्षणे)** हे द्रष्टा! **(जातवेदः)** ज्ञान को उत्पन्न करने वाले **(अग्ने)** अग्रणी परमात्मन्! (आप हमें) **(प्रजावत्)** सन्तति-युक्त **(ब्रह्म)** अध्यात्म-ज्ञान **(आभर)** प्रदान कीजिए **(यत्)** जो **(दिवि)** (हमारे) आत्मा में **(दीदयत्)** प्रखर प्रकाश के साथ चमके।

● **हे** अग्निस्वरूप परमात्मन्! आप 'विचर्षणि' हैं, द्रष्टा हैं। आपका ज्ञान प्रत्यक्ष पर आश्रित है, अतएव यथार्थ एवं निर्भ्रान्त है। आप 'जातवेदाः' हैं, हृदयों में ज्ञान को उत्पन्न करने वाले हैं। जब हम बेबस हो अज्ञानान्धकार में टटोल रहे होते हैं, उस समय हमारे हृदय में ज्ञान की विद्युत आप ही चमकाते हैं। हम मानवों को वेदज्ञान से अनुगृहीत करने वाले भी आप ही हैं। इस समय हमारा आत्मा-अध्यात्म-ज्ञान शून्य हो भौतिक विज्ञान की चकाचौंध से आकृष्ट हो उसी की उपासना में संलग्न हैं। पर भौतिक विज्ञान ने अपनी चरम सीमा पहुंच कर अपने खोखलेपन को सिद्ध कर दिया है, क्योंकि उससे दुःख से कराह रहे मानव को शान्ति नहीं मिल रही है, अपितु वह कराहट और बेचैनी को बढ़ाने में ही सहायक हो रहा है। अतः भौतिक विज्ञान की तीक्ष्ण मार से संत्रस्त हो हम अध्यात्म-ज्ञान के पिपासु हो गये हैं, जिस अध्यात्म-ज्ञान को यहां वेद ने 'ब्रह्म' शब्द से अभिहित कियाहै, क्योंकि हम वृहत् हैं, महान हैं, सारवान् हैं।

हे ज्ञानचित् परमेश्वर! आप हमें वह दिव्य अध्यात्म-ज्ञान प्रदान कीजिए, जिसके सम्मुख सब सांसारिक ज्ञान फीके पड़ जाते हैं। हम यह भी चाहते हैं कि वह ज्ञान 'प्रजावत्' हो, समाप्त हो जानेवाला नहीं, किन्तु अपनी नवीन-नवीन सन्ततियों को उत्पन्न करने वाला हो अर्थात् निरन्तर वृद्धिशील हो। साथ ही वह विविध दिव्य-गुण-रूप सन्ततियों को जन्म देने वाला हो। वह हमारे आत्म-लोक में प्रखर प्रकाश के साथ चमके, दामिनी-सा दमके, जिसकी ज्योति में हम कर्त्तव्याकर्त्तव्य के सब संशयों से मुक्त हो जायें, जिसे पाकर हम पूर्णतः तुममें लवलीन हो जायें।

---

*संस्कृतार्थ :- १. विचर्षणिः द्रष्टा (निघं ३.११), २. आभर आहर। हृञ् हरणे, हृ को भृ।, ३. दीदयति ज्वलति (निघं १.१६) ४. ब्रह्म परिवृढं सर्वतः (निरु १.७)। बृहिवृद्धौ, मनिन्।*

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

# धुन के धनी, निर्भीक आर्य नेता - **स्वामी श्रद्धानन्द**

**२३ दिसंबर को जिनका बलिदान दिवस है:-** भारतीय स्वतंत्रता में अग्रणी भूमिका निभाने वाली संस्था आर्यसमाज के अग्रगण्य महापुरूषों में जिनका पुण्य स्मरण किया जाता हो, महान देशभक्तों की प्रथम पंक्ति में जिनका नाम श्रद्धा से लिया जाता हो। जो अखिल भारतीय कांग्रेस के संकट मोचक माने गये हों , मोहनदास करमचन्द गाँधी को महात्मा बनाने वाले तथा शुद्धि आन्दोलन के प्रखर प्रणेता होने के बावजूद भी जिन्हें साम्प्रदायिक सौहार्द्र में अग्रणी मानकर दिल्ली के जामा मस्जिद की मिम्बर से मुसलमानों को देशभक्ति के लिए प्रेरित करने को आमंत्रित किया गया हो, अंग्रेज सरकार से बहादुरी पूर्वक टक्कर लेने वाली छबि और सिद्धान्तों की तारीफ के पुल बाँधता हो, १८६८ ई. में जिस महान् व्यक्तित्व ने अल्प समय में ही उस समय की विशाल धनराशि ४०,०००/-रूपये दान स्वरूप संग्रह के साथ-साथ लगभग 1800 बीघे का पूरा गांव राष्ट्र महायज्ञ के लिए आहूत करके जिसने ऋषि ऋण चुकाने की पावन परंपरा का निर्वाह किया हो ,ऐसे अमर हुतात्मा के जीवन से प्रेरणा लेकर आइए हम भी अपना जीवन धन्य करें ।

**१. आदर्श शिक्षा के उन्नायक:-**

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत प्रकृष्ट चिंतन था इसलिए उन्होने छात्रों को विद्धान् मनीषी तथा ब्रह्मचारी बनाने के लिए बीसवीं सदी के आरंभ में अपने गुरुवर ऋषि दयानन्द के आदर्शों के अनुरूप गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का इस आधुनिक युग मे सर्वप्रथम सूत्रपात किया। गुरूकुल तो स्वामी जी के बाद भी खुले तथा आज भी चल रहें हैं। तथापि उनका क्षेत्र बहुआयामी न होकर केवल कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है। आज अधिकांश गुरूकुलों की यही स्थिति है। यद्यपि आज गुरूकुल कांगड़ी में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है उस समय की विद्धत्ता तथा कर्मठता नहीं रह गई है, किन्तु गुरुकुल परम्परा का एक जीवन्त एवं जाज्वल्यमान संस्थान के रुप में पर्याप्त प्रसिद्धि पा चुका है अब उत्तर भारत में एक महान एवं आदर्श शिक्षा केन्द्र की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। समय के साथ अनगिनत उत्थान के बीच अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने में सफल रहा है।

**२. स्वच्छ राजनीति केपोषक :-**

इन कार्यों के साथ-साथ स्वामी जी तात्कालिक राजनीतिमें भी प्रमुख भूमिका निभाते रहे। स्वामी जी राजनीति में किसी पद के लिए नहीं गये थे, अपितु इसके माध्यम से समाज सुधार के

thearyasamaj.org

लिए गए थे। आज सर्वत्र व्याप्त भ्रष्टाचार की राजनीति किससे छिपी है । वे राजनीति में भी नैतिकता तथा धार्मिकता चाहते थे । इसलिए उन्होने लिखा था कि आज ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है, जो दुसरों को धोखा देना भी वैसा ही पाप माानता हो जैसा कि अपने आपको धोखा देना । आर्य समाज ने राष्ट्रीय क्षेत्र में राजनीति को छोड़ दिया यह न तो आर्यसमाज के लिए शुभ रहा तथा न ही देश के लिए । राजनीति से दूर रहकर आप स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित चक्रवर्ती साम्राज्य कैसे प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का दृष्टिकोण इसी सकारात्मक चिंतन पर आधारित था

**३. सत्य के पुजारी :-**

स्वामी श्रद्धानन्द सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के परम उपासक थे अज्ञान की अवस्था में उनका जीवन विपरीत दिशा की ओर बढ़ता रहा। किन्तु आँख खुलते ही उन्होनें अपने दोषों को उसी प्रकार दूर फेंक दिया जैसे कि कोई गले में पड़े विषधर सर्प को स्वामी जी का सत्य के प्रति कितना आग्रह एवं आदर था कि संन्यास लेते समय **पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकेषणा मया परित्यक्ता** बोलते समय अन्त में बोल उठे **लोकेषणा तु मया न परित्यक्ता** है कोई समाज में मिलेगा इतना स्पष्टवादी यथार्थचिंतक ? प्रभु भक्ति एवं मृत्यु से अभय तो स्वामी जी को अपने गुरु ऋषि दयानन्द से ही प्राप्त हुए थे। प्रभुभक्त निश्चित ही मृत्यु से अभय रहता है। ऋषि दयानन्द अपने आप को तोप के मुख के आगे बांध देने पर भी तथा कोई उनकी अंगुलियो को बत्ती बनाकर जला देने से भी सत्य को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे तो उनका शिष्यनिर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द भी गोरे सैनिकों की संगीनों के समाने शान्त भाव से सीना खोलकर तान देते हैं और ललकारते हुए कहते हैं -**सन्यासी का सीना खुला है हिम्मत हो तो चला दो गोली**। यही है मृत्यु को जीतना, ऐसे व्यक्ति ही मृत्युञ्जय कहलाने के पात्र होते हैं ।

**४. राष्ट्रीय एकता के पक्षधर :-**

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में भी अधिक आश्चर्यजनक घटना 4 अप्रैल 1919 को हुई ऐसी घटना न भूतकाल में हुई न भविष्य में होने की संभावना ही है। मुस्लिम नेताओं के आदेश से दो प्रतिनिधि स्वामी श्रद्धानन्द के निवास पर पहूँचे। उन्हें सविनय निवेदन के बाद ससम्मान गाड़ी पर बैठाकर जामा मस्जिद लाए। प्रधान मौलवी सहित सभी मुसलमानों ने जयघोष के साथ स्वागत किया और नम्र निवेदन किया कि वर्त्तमान विकट समय में मुसलमानों को कर्त्तव्य का उपदेश करें। वेदी पर विराजमान स्वामी श्रद्धानन्द जी ने निम्न समयोपयोगी महत्वपूर्ण चिंतन एक वेद मंत्र के माध्यम से जनसमुदाय को सम्बोधित किया। **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ अधाते सुम्नमीमहे।** जिसका अर्थ है- हे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक

thearyasamaj.org

कृपालु परमात्मन् आप हमारे पिता के सदृश पालक हो ममतामयी माता के समान अनेक प्रकार से हमें सुख प्रदान करते हुए हित चिन्तक हो आपकी छत्र छाया में हमें परम सुख मिलता है। इस प्रकार आपने जामामस्जिद के पवित्र मंच से वेद मन्त्रों द्वारा एकता का सन्देश दिया। राष्ट्रीयता एवं निर्भीकता के कारण ही पंजाब के अमृतसर नगर में उस स्थिति में जबकि जनता जलियांवाला काण्ड से अत्यंत त्रस्त थी, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अधिवेशन सम्पन्न कराने का अद्‌भूत साहसिक कर्त्तव्य सफलता पूर्वक निभाया था।

**उपसंहारः-**

इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के प्रबल पक्षधर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आजीवन भारतीय समाज में फैली हुई सामाजिक विषमता के विरुद्ध सदैव महती भूमिका निभाई अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने ऐसे आदर्श समाज के सामने उपस्थापित किये आज उसका उदाहरण मिलना भी असंभव है। अपनी परंपरागत उपासना पद्धति एवं राष्ट्रीय अस्मिता का परित्याग कर जो भूले भटके भाई-बहन अपनी मूलधारा से बहुत दूर जा चुके थे। उन्हें अपने पूर्व गौरव और महानता का परिचय प्रदान कर अपने गले लगाया। ऊंच-नीच की गंभीर खाई को पाटने में उस राष्ट्र संत ने जो अनुपम प्रयत्न किए उन्हें चन्द पंक्तियों में समेटना सर्वथा असंभव है। धार्मिक रूढ़िवादिता को सदा के लिए परिसमाप्त कर भारतीय समाज को पूर्व कालीन ऋषि युग का स्मरण करा कर वैदिक विचारधारा का प्राण प्रण से प्रचार करते हुए धर्म के शुद्ध स्वरूप को जनता के सामने रखा। जातिवाद को स्वामी जी स्वस्थ समाज के लिए घोर कलंक मानते थे, यही वजह है उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी(अब विश्वविद्यालय) में पहले आचार्य कक्षा पढ़ते तक किसी बालक की जाति का ज्ञान किसी को हो नहीं पाता था। भेदभाव से कोसों दूर स्वामी जी का व्यक्तित्व इतना महान था कि वे अपने जीवन काल में ही गरीबों के मसीहा माने जाते थे। सुधारवादी आन्दोलन के कारण दिग् दिगंत में फैल रही स्वामी ज़ी की कीर्ति से असंतुष्ट होकर षड़यंत्रकारियों द्वारा एक मदान्ध मुसलमान के हाथों स्वामी जी 23 दिसंबर 1926 को शहीद हो गये। स्वामी जी तो शहीद हो गये किन्तु अपने पीछे छोड़ गए अनुयायियों की एक अन्तहीन श्रृंखला। कौन कहता है स्वामी जी इस धरती से चले गए ? बिल्कुल नहीं जब तक स्वामी जी द्वारा स्थापित पालित पोषित गुरुकुलों का संचालन होता रहेगा आर्य संस्कृति का विस्तार होता रहेगा, दयानन्द के सपनों का भारत बनता रहेगा तब तक स्वामी श्रद्धानन्द हमारे बीच जीवन्त रहेंगे और अपनी निर्भीक देशभक्ति व वैदिक निष्ठा की प्रेरणा देते रहेंगे।

आइए, उनके बलिदान दिवस पर हम भी संकल्प लें कि हम सब मिलकर एक विसमतायुक्त समरसता युक्त राष्ट्र का नवनिर्माण करेंगे।

**- आचार्य कर्मवीर**

thearyasamaj.org

# श्रेष्ठ मानव जीवन का आधार - "वैदिक संस्कार"

**वैचारिक**

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

संस्कार की चर्चा तो सभी करते हैं, परन्तु संस्कार का शब्दार्थ व भावार्थ क्या है ? संस्कार किसी अपूर्ण, संस्काररहित या संस्कारहीन वस्तु या मनुष्य को संस्कारित कर उसका इच्छित लाभ लेने के लिए गुणवर्धन या अधिकतम मूल्यवर्धन (value addition) कर है। यह गुणवर्धन व मूल्यवर्धन भौतिक वस्तुओ का किया जाये तो वैल्यू एडीसन कहलाता है और यदि मनुष्य का करते हैं तो इसे ही संस्कार कह कर पुकारते हैं।

मनुष्य जन्म के समय शिशु शारीरिक बल व ज्ञान से रहित होता है। पहला कार्य तो अच्छी प्रकार से उसका पालन-पोषण द्वारा शारीरिक उन्नति करना होता है। इसे शिशु का शारीरिक संस्कार कह सकते हैं। यह कार्य माता के द्वारा मुख्य रुप से होता है, जिसमें पिता व परिवार के अन्य लोग भी सहायक होते हैं। बच्चा माता का दुग्ध पीकर, कुछ माह पश्चात स्वास्थ्य व पुष्टिवर्धक भोजन कर तथा व्यायाम आदि के द्वारा शारीरिक विकास व वृद्धि को प्राप्त होता है। मनुष्य की पहली उन्नति शरीर की उन्नति होती है और इसके लिए कुछ भी किया जाता है, वह भी संस्कार ही है। शारीरिक उन्नति के पश्चात सन्तान के लिए सुशिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षारहित सन्तान, शूद्र, पशु व ज्ञानहीन कहलाती है और शिक्षा प्राप्त कर उसकी संज्ञा द्विज अर्थात् ज्ञानवान होती है और वह अपने प्रारब्ध व इस जन्म के आचार्यों द्वारा प्रदत्त ज्ञान से ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य बनकर देश व समाज की उन्नति में योगदान करता है। इस प्रकार से संस्कार की यह परिभाषा सामने आती है कि जीवन की उन्नति जो कि धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति का साधन है, के लिए जो-जो शिक्षा, वेदाध्ययन आदि कार्य व क्रियाकलाप किये जाते हैं, वह संस्कार कहलाते हैं।

चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ईश्वरीय ज्ञान है जो कि सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को वैदिक भाषा संस्कृत के ज्ञान सहित दिये गये थे। इन वेदों में ईश्वर ने वह ज्ञान मनुष्यों तक पहुंचाया जो आज १,९६,०८,५३,११४ वर्ष बाद भी सुलभ है। **यह वेदों का ज्ञान ही मनुष्य की समय उन्नति का आधार है।** इस ज्ञान को माता-पिता और आचार्यों से पढ़कर मनुष्य की समय, शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होती है। उदाहरण के रुप में हम आदि पुरुष ब्रह्मजी, महर्षि मनु, पतंजलि, कपिल, कणाद, गौतम, व्यास, जैमिनी, राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द आदि ऐतिहासिक महापुरुषों को ले सकते हैं जिनकी शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति का आधार वेद था। वेदाध्ययन यद्यपि वेदारम्भ और उपनयन इन दो संस्कारों के अन्तर्गत आता है परन्तु इन दोनों संस्कारों का महत्व अन्यतम है। नित्य आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय का भी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों के आधार पर जिन सोलह संस्कारों का विधान है वह क्रमशः **गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह-गृहस्थ, वानप्रस्थ-संन्यास व अन्त्येष्टि संस्कार है।** इन संस्कारों को करने से मनुष्य की आत्मा सुभूषित, संस्कारित एवं ज्ञानवान होती है और जीवन के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। इनके साथ नित्य प्रति पञ्चमहायज्ञों तथा सन्ध्योपासना, दैनिक अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेव यज्ञ करना अनिवार्य है। इन संस्कारों को विस्तार से जानने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत संस्कार विधि ग्रन्त और इसके अनेक व्याख्या ग्रन्थ जिनमें संस्कार भास्कर और संस्कार चन्द्रिका आदि मुख्य है, का अध्ययन लाभप्रद होता है।

thearyasamaj.org

वैदिक धर्म और संस्कृति में वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन किए हुए युवक-युवती का विवाह योग्य सन्तान और देश के श्रेष्ठ नागरिकों की उत्पत्ति के लिए होता है। **संसार के शिक्षित और अशिक्षित सभी माता-पिता अपनी सन्तानों को स्वस्थ, दीर्घायु, बलवान, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, मातृ-पितृ-आचार्य-भक्त, विद्यावान, सदाचारी, तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी, सुखी, समृद्ध, दानी, देशभक्त आदि बनाना चाहते हैं। इसकी पूर्ति केवल वैदिक धर्म के ज्ञान व तद्नुसार आचरण से ही सम्भव है।** आज की स्कूली शिक्षा में वह सभी गुण एक साथ मिलना असम्भव है, जिससे ऐसे योग्य देशभक्त नागरिक उत्पन्न हो सकें। केवल वैदिक शिक्षा से ही इन सब गुणों का एक व्यक्ति में होना सम्भव है जिसके लिए अनुकूल सामाजिक वातावरण भी आवश्यक है। हमारे सभी वैदिक कालीन और कलियुग में महर्षि दयानन्द इन्हीं वैदिक संस्कारों में दीक्षित महात्मा थे। वेदों के ज्ञान के कारण ही हमारे देश में ऋषि, महर्षि, योगी, सन्त आदि हुए हैं। अन्य देशों में यह सब गुण किसी एक व्यक्ति में पूरी सृष्टि के इतिहास में नहीं देखे गये हैं। हमारे पौराणिक मित्र व बन्धु वेदों के अध्ययन व आचरण को त्याग कर पुराम सम्मत मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलितज्योतिष, छुआछूत, जन्म पर आधारित जातिवाद जैसे अवैदिक व अनुचित कृत्यों को करने में समय लगाते हैं। इन अवैदिक कृत्यों का जीवन से निराकरण केवल पक्षपातरहित होकर सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर सदाविवेक से कार्य करने पर ही हो सकता है।

सन् १९४७ में भारत विदेशी दासता से स्वतन्त्र हुआ। आवश्यकता थी कि देश में सर्वत्र, आध्यात्मिक जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा हो, परन्तु इसके विपरीत धर्मनिरपेक्षता का सिद्धान्त जहां ईश्वर के सत्य ज्ञान वेदों को प्रतिष्ठा नहीं मिली। सभी मतों की पूजा पद्धतियां अलग-अलग ही होंगे। सभी उपासना पद्धतियों से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होना असम्भव है। वह केवल वैदिक उपासना पद्धति से ही सम्भव है। अतः संस्कारों को केन्द्र में रखते हुए अपने जीवन को सत्य को ग्रहण करने वाला, असत्य को निरन्तर व हर क्षण छोड़ने के लिए तत्पर रहने वाला, सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करने वाला बनाना होगा। यह संस्कारों से ही सम्भव है और यह संस्कार मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण सहित हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती में रहे हैं, जिनका हमें अनुकरण करना है। इन महापुरुषों के जीवन चरित का अध्ययन कर उनके गुणों को आत्मसात कर सुसंस्कारित हुआ जा सकता है।

निष्कर्ष यह कि संस्काररहित मनुष्य पशु के समान होता है। अतः प्रत्येक मनुय को संस्कार विधि का गहन अध्ययन कर संस्कारों की विधि और उनके महत्व को जानना व समझना चाहिए। वेदाध्ययन कर वेदानुसार आचरण करना चाहिए। शारीरिक उन्नति पर ध्यान देना चाहिए। शुद्ध शाकाहारी व पुष्टिकारक भोजन करते हुए संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

*पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१*

# गीतिका

**दृग भटकते हैं, भटकने दीजिये,**
**सूलियों पर दिल लटकने दीजिये,**
**सो न सकते तो करो प्रभु का भजन,**
**छत टपकती है, टपकने दीजिये,**
**घट गयी घटना, न होगी अन्यथा,**
**कोई सिर पटके, पटकने दीजिये,**
**वस्त्र तन के यात्रा में थक गये,**
**खूंटियों पर अब लटकने दीजिये,**
**नगर की गलियों में नजरे अटकता,**
**आपका क्या है? अटकने दीजिये,**
**दर्शनों को भीड़, द्वारे पर खड़ी,**
**दृष्टि अटकी है, अटकने दीजिये,**
**बन गये तारे छिटक कर सूप से,**
**रात को चावल फटकने दीजिये,**
**चांदनी में लोग टहले, मद पिये,**
**वस्त्र यदि सरके, सरकने दीजिये,**

रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र', डी-४, उदय हाउसिंग
सोसा. बैजलपुर, अहमदाबाद-३८००१५

thearyasamaj.org

डॉ. वेद प्रताप वैदिक
भारतीय विदेश नीति
परिषद के अध्यक्ष

## सच्चे संत और समाज सुधारक संस्थाएँ खुला अभियान चलाएं, इनके मददगार नेताओं की निंदा करें .

# ढोंगी साधुओं के खिलाफ शंखनाद हो

हरियाणा सरकार और केन्द्रीय गृह मंत्रालय बधाई के पात्र हैं। यदि उन्होंने धीरज और संयम से काम नहीं लिया होतो बरवाला के सतलोक आश्रम की मुठभेड़ में सैकड़ों लोग मारे जाते। रामपाल के आश्रम में तैयारी उतनी घातक तो नहीं पर उसी तर्ज पर थी, जो १९८४ में भिंडरवाला ने स्वर्णमंदिर में कर रखी थी। महीनों तक चलने वाली रसद, रिवाल्वर, बंदूके, बम-गोले और तेजाब की बोतलें क्या-क्या नहीं मिला है, रामपाल के आश्रम से। रामपाल ने पुलिस पर हमला बोलने के निये सेवानिवृत्त फौजियों की सेना भी खड़ी कर रखी थी। घायलों के इलाज के पूरे अस्पताल जैसी तैयारी थी। १६ एकड़ के इस किलेनुमा आश्रम को रामपाल ने छोटे-मोटे राज्य में बदल दिया था। इस लघु राज्य के महान राजा की तरह वह शासन और अदालत दोनों की खुली चुनौती देता था। उसके अनुयायी उसे परमात्मा कहकर पुकारते थे। अदालत के कठोर आदेश के बावजूद वह १७-१८ दिन तक राज्य सरकार को ब्लैकमेल करता रहा। वकीलों ने कहना शुरु कर दिया था कि रामपाल को कोर्ट के सामने पेश करना अब असंभव हो गया है। कोर्ट में उसकी पेशी करना उसके हजारों समर्थक अदालत और जजों को घेर लेते थे, लेकिन अब खट्टर सरकार की चतुराई के आगे रामपाल को भीगी बिल्ली बनना पड़ा। वह दुम दबाए अदालत पहुंच गया और सिर झुकाए कटघरे में खड़ा रहा। ढोंगी संत धराशायी हो गया।

वह संत या परमात्मा होगा तो कुछ चमत्कार तो दिखाया। चलो चमत्कार न सही, यदि उसमें जरा-सी भी बहादुरी होती तो पुलिस से लड़ते-लड़ते जान दे देता। यदि वह सचमुच अध्यात्म-पुरुष होता तो आमरण अनशन करके प्राण त्याग देता ।यदि उसमें जरा भी शर्म होती तो वह जहर खाकर सो जाता, लेकिन अपने आपको संत कहने वाला वह व्यक्ति कितना डरपोक और कायर निकला। उसके दो हफ्ते तक अपने भोले भक्तों को तोप का भूसा बना दिया। उन्हें सशस्त्र पुलिस का सामना करने के लिये तैनता कर दिया, उन्होंने पुलिस को डराने-धमकाने की भी कोशिश की, लेकिन पुलिस ने रक्तहीन-क्रांति-सी कर दी। जो छह लोग मारे गए हैं, वे मुठभेड़ के शिकारनहीं मालूम पड़ते हैं। वे भगदड़ या उस आश्रम के रहस्यमय कारनामें की बलि चढ़े हैं। रामपाल का यह आश्रम या किसी अय्याश सामंत का विलास-महल! उसे आश्रम के सामने आए चित्रो-ब्यौरों पर कौन विश्वास करेगा कि यह किसी संत का निवास है ? अपने आपको महान संत कबीर का अवतार कहने वाले इस व्यक्ति के जीवन में कबीर का रत्तीभर भी अस्तित्व नहीं है। कबीर ने साधु या संत किसे कहा है ? संत वह है, जो अकेला चलता है। वह हजारों हथियार बंद लोगों को जमा नहीं करता है। कबीर के शब्दों में - **सिंहों के लाहड़े नहीं, हंसों की नहीं पांत। लालों की नहिं बोरियां, साधु चले न जमात ॥**

हजारों चेले-चेलियों को अपने चक्कर में फंसाए रखने वाला कोई व्यक्ति क्या सच्चा साधु हो सकता है ? अपनी पूजा करवाना इन साधुओं की सबसे बड़ी वासना होती है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे जादू-टोने, चमत्कार, झाड़-फूंक, हाथ की सफाई, तंत्र-मंत्र और ज्योतिष आदि कई तिकड़मों का सहारा लेते हैं। रामपाल भी इन तिकड़मों का उस्ताद है, यह उसके गिरफ्तार चेलों के बयानों से पता

thearyasamaj.org

चलता है। किसी को संयोगवश कोई फायदा हो जाता है, तो वह इन गुरुओं, संतों और बाबाओं को भगवान मानने लगता है और वे गुरु सब बात समझते हुए भी सचमुच यह मानने लगते हैं कि वे भगवान हैं और अलौकिक शक्तियों के स्वामी हैं। इन स्वामियों, साधुओं, गुरुओं की पोल महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अब से डेढ़ सौ साल पहले जमकर खोली थी। उन्होने देश में सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया था। वे स्वाधीनता-संग्राम के पितामह थे। आर्यसमाज के संस्थापक थे। उनके महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पर रामपाल ने अनर्गल टिप्पणियां की थी। हरियाणा आर्यसमाजियों ने उनका करारा जवाब दिया था।

रामपाल के ढोंगीपन को उजागर करने के कारण ही २००६ में हरियाणा के आर्यसमाजियों और रामपाल के अंधभक्तों में जमकर मुठभेड़ हुई थी। उसमें एक व्यक्ति की हत्या भी हुई थी। इसी हत्याकाण्ड के सिलसिले में रामपाल ने ४३ बार अदालत के वारंट की अवमानना की। उसने राज्य नामक संस्था को नकार दिया। उसने अपने भाषणों और पर्चों में जजों पर रिश्वत लेने के आरोप लगाए और यह भी कहा कि उसे अदालत में घसीटने वाले जज ने उससे रिश्वत मांगी थी। उसे रिश्वत नहीं देने के कारण ही उसकी गिरफ्तारी के वारंट जारी कर दिए गए।

वास्तव में हरियाणा सरकार ने रामपाल को क्या पकड़ा, सभी ढोंगी साधुओं और संतों को यह चेतावनी दे दी है कि उन्हें कानून का उल्लंघन करने की छूट नहीं दी जा सकती। इस कार्रवाई के बाद अब सरकार को चाहिए कि इस तरह के साधुओं, संतों और बाबाओं के आश्रमों, उनके आय-व्यय, उनके पाखण्डों और उनके पट-शिष्यों पर कड़ी निगरानी का स्वागत करेंगे। उनके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं होता। उनका जीवन खुली किताब की तरह होता है। साधु और संत का वेश धारण करके जो लोग अनैतिक और अवैध धंधों में लिप्त रहते हैं, उनके पास हमारे कई नेतागण कतार लगाए रहते हैं, क्योंकि उनके लिए तथाकथित साधु वोट और नोट के मुख्य स्रोत होते हैं। अनैतिक और अवैध धंधों से जमा होने वाले मोटे पैसे और साधनों के आते ही वे सर्वस्य त्यागी साधु राजनीति में हस्तक्षेप करने लगते हैं। ये साधु जो नेताओं के गले के हार बनते हैं, उन्हें उनके गले का सांप बनते देर नहीं लगती।

यह ही साधु भिंडरावाला, रामपाल, आसाराम के रुप में पकड़े जाते हैं। अपराधी नेताओं को काबू करना तो आसान होता है, लेकिन धर्म की ओट में अपराध करने वाले लोग कहीं अधिक शातिर होते हैं। रामपाल की धूर्तता का आप जरा अंदाज लगाएं। वह रोज दूध से नहाता था और उस दूध की खीर का प्रसाद भक्तों में बांटा जाता था। ऐसी धूर्तता कानून के डंडे से नहीं रोकी जा सकती, क्योंकि वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन होगा, लेकिन इसी धूर्तता के आधार पर ही ढोंगी साधु राजद्रोह करने का दुस्साहस करने लगते हैं। अकेले हरियाणा में एक नहीं, कई रामपाल है। सारे देश में ये फैले हुए हैं। जहां-जहां अज्ञान है, असुरक्षा है, अभाव है, वहां-वहां रामपाल है।

ऐसे धूर्त संतों के विरुद्ध सबसे पहले सच्चे संतों को अपना शंखनाद करना होगा। वे लिहाज करेंगे तो वे अपने ही कुनबे को बदनाम होने में मदद करेंगे। महर्षि दयानन्द ने अगणित आक्रमण सहे और अंत में विषपान भी किया, लेकिन अपनी पाखंड खंडिनी पताका को कभी झुकने नहीं दिया। दूसरा समाज सुधारक संस्थाओं को ऐसी ढोंगियों के विरुद्ध खुलेआम अभियान चलाना चाहिए। जो राजनेता इन ढोंगियों से अपना उल्लू सीधा करते हैं, उनकी कड़ी निंदा करनी चाहिए। तीसरा आसाराम और रामपाल जैसे लोगों को जनता चाहे तो अपना गुरु अवश्य धारण करें, क्योंकि उनके आचरण ने गुरुओं के पाखंड को बेनकाब कर दिया है। कबीर ने कहा भी है, सच्चा गुरु वहीं है, आंखे खोले।

**महर्षि दयानन्द ने अगणित आक्रमण सहे और अंत में विषपान भी किया, लेकिन अपनी पाखंड खंडिनी पताका को कभी झुकने नहीं दिया।**

thearyasamaj.org

विचारात्मक

# व्यक्ति धर्म, राष्ट्र धर्म एवम् अध्यात्म का उत्तम ग्रन्थ 'गीता'

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

श्री नरेन्द्र मोदी जी जापान की राजकीय यात्रा पर गए थे, इस यात्रा के कई आवश्यक निहितार्थ है, दोनों राष्ट्रों, भारत और जापान के बीच कई समझौते हुए, इन समझौतों का आयाम राजनयिक, सामरिक, आर्थिक और सांस्कृतिक होना अनिवार्य था। भारत और जापान के मध्यन चीन जैसा विस्तारवादी, महत्वाकांक्षी अपनी दादागिरी चलाने वाला राष्ट्र है। अपने सभी पड़ोसी देशों को अपने प्रभाव में दबाकर रखने वाली चीन की नीति विश्वप्रसिद्ध है। भारत को सामरिक और आर्थिक दृष्टि से नीचा दिखाकर रखना चीन की विदेश नीति का आवश्यक अंग है। यहां हम भारत चीन के संबधों पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। यहां हमारा उद्देश्य केवल इतना सा है कि चीन को यह विदित हो जाए कि भारत का जापान के साथ बहुआयामी समझौता हो चुका है। इससे संभव है कि चीन की आक्रामक नीतियों पर कुछ नियंत्रण हो सकता है। जापान के साथ भारत ने कई प्रकार के समझौते किये। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जापान के सम्राट को विश्वविख्यात पुस्तक गीता उपहार में दी। यह एक सूझ-बूझ का महत्वपूर्ण कार्य है। जापान भारत को अपनी धर्मभूमि मानकर बहुत आदर की दृष्टि से देखता है। जापान के धर्मगुरु गौतम बुद्ध को बोधगया में धर्म बोध की प्राप्ति हुई थी। सारनाथ में गौतम बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया था। बोध गया और सारनाथ दोनों जापानियों के पवित्र तीर्थ स्थल है। हजारों-हजार जापानी पर्यटक प्रतिवर्ष इन दोनों तीर्थों की यात्रा के लिए भारत वर्ष आते हैं। इस दृष्टि से गीता का उपहार अपना सांस्कृतिक महत्व रखता है।

**गीता में व्यक्ति धर्म और राष्ट्रधर्म :-**

गीता का आरम्भ महाभारत के अद्वितीय योद्धा अर्जुन के विषाद से होता है। जब कौरव-पाण्डव दोनों दलों की सेनाएं व्यूह बनाकर खड़ी हो गयी तो अर्जुन ने अपना रथ दोनों सेनाओं के बीच खड़ा करने का अनुरोध श्रीकृष्ण से किया, अर्जुन ने देखा कि उसके सामने सगे-सम्बन्धी पितामह, गुरु, भाई, बंधु सब मरने मारने को उद्द्यत है, अर्जुन दोनों सेनाओं में सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर था, उसके पास पाशुपत और ऐन्द्रास्त्र आदि ऐसे ऐसे दिव्यास्त्र थे कि जिनका प्रतिरोध भीष्म, द्रोण, कर्ण किसी के वश में नहीं था, किन्तु अर्जुन स्वजनों के मोह में अपना व्यक्तिधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों गंवा बैठा, वह भूल बैठा कि उसका व्यक्तिधर्म क्षत्रिय का है और राष्ट्रधर्म अन्यायी, अततायियों को मारकर न्याय की स्थापना करना है। वह कहता है -

**येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगः सुखानि च,**
**त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणान्स्त्याक्त्वा धनानि च।**

(गीता १/३३)

अर्थात् हमें जिनके लिए राज्य, भोग और सुखादि अभीष्ट है, वे ही थे सब धन और जीवन की आशा को त्यागकर युद्ध में खड़े हैं, अर्जुन अपना व्यक्तिधर्म भी नष्ट कर बैठा था, वह महायोद्धा नर्वस हो गया था। वह कहता है, मेरा शरीर ऐंठा जा रहा है, मुख सुख रहा है, शरीर कांप रहा है, मुझे पसीना छूट रहा है, रोयें खड़े हो गए हैं, धनुष मेरे हाथ से छूट रहा है, चमड़ी जल रही है, मैं खड़ा नहीं हो पा रहा हूँ, मेरा मस्तिष्क घूम रहा है, नर्वसनेस का ऐसा सटीक वर्णन विश्व इतिहास में दुर्लभ है। स्मरण रखना चाहिए कि यह वही धनुर्धर अर्जुन है जिसने एक रथ से अकेले ही विराटनगर में कौरव सेना के सभी महारथियों को सेना समेत पराजित कर दिया था। इस प्रकार अर्जुन के विषाद में अर्जुन का व्यक्तिधर्म और राष्ट्रधर्म दोनों नष्ट हो गया था।

श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि अर्जुन तुम पंडितों की भाषा बोल रहे हो, किन्तु यह भूल रहे हो कि आत्मा अमर है और जीवात्मा अजर अमर है, इसलिए जीवात्मा

thearyasamaj.org

मरता नहीं है, मरता है केवल शरीर और जीवात्मा दूसरा जन्म ले लेता है।- **देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनम् जरा, तथा देहान्तर्प्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।** (गीता २/१३) अर्थात् जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है। इस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता और भी **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्धुवं जन्म मृतस्य च।** (गीता २/२७) श्री कृष्ण कहते हैं कि अर्जुन युद्ध करके न्याय की स्थापना क्षत्रिय का धर्म है - **स्वधर्मपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि, धर्म्याद्धियुद्धछ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते** (गीता २/३१) अर्थात् अपने क्षत्रिय धर्म को देखते हुए भी तुम्हें युद्ध से विचलित नहीं होना चाहिए। धर्मयुद्ध से बढ़कर क्षक्षिय का कोई कर्त्तव्य कर्म नहीं है। यदि तुम युद्ध नहीं करोगे तो लोग यही कहेंगे कि अर्जुन युद्ध के भय से डर गया - **हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम् जित्वा वा भोक्ष्य से महीम्, तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।** (गीता २/३७) अर्थात् या तो तू युद्ध में मारा जाकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा संग्राम में जीतकर पृथ्वी का राज्य भोगेगा, इस कारण हे अर्जुन! तू युद्ध के लिए निश्चय करके खड़ा हो जा, इस प्रकार गीता के उपदेश में अर्जुन के व्यक्तिधर्म और राष्ट्रधर्म की रक्षा की है।

**गीता अध्यात्म का ग्रन्थ :-**

गीता में लगभग ७०० श्लोक बताये जाते हैं, इनमें से संभवतः आधे से अधिक अध्यात्म की उन्नति से संबंधित है। हम इतने विशाल विषद प्रसंग को इस छोटे से लेख में लिखने में असमर्थ हैं, फिर भी इतना तो कहना ही चाहते हैं कि प्राणायामपूर्वक ओंकार का जप, उसी की भावना करते रहना चाहिए, श्रीकृष्ण की सम्मति में यज्ञ, दान और तप मनीषियों को भी पवित्र करने वाले हैं। अतः यज्ञ (सारे परमार्थकारी) दान (धन, अन्न, वस्त्र, विद्या आदि सभी कर्म) और तप अपने कर्म को सत्यनिष्ठा से करना आवश्यक है।

अध्यात्म की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा मनोविकारों की है। मनोविकार - काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि कभी इन्द्रियों को प्रभावित करके मन को दबा लेते हैं और कभी मन में पैदा होकर इन्द्रियों को उत्तेजित कर देते हैं। कभी रसगुल्ले का स्वाद जीभ को प्रभावित करके मन पर अधिकार कर लेते हैं। कभी मन पर अधिकार करके जीभ को प्रभावित कर लेते हैं। इनमें काम (सेक्स) और क्रोध साथ-साथ रहते हैं तथा सबसे अधिक बलवान अर्जुन ने एक प्रश्न पूछा है - **अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पुरुषः, अनिच्छन्नाप वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।** (गीता ३/३६) अर्थात् मनुष्य न चाहते हुये भी किसके द्वारा प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है। श्रीकृष्ण उत्तर देते हैं - **काम एष क्रोध् एष रजोगुणसमुद्भवः, महाशनो महापाप्मा विध्द्येनमिह वैरिणम्।** (गीता ३/३७) अर्थात यह काम (सेक्स) और क्रोध ही है जो भोगों से कभी तृप्त नहीं होता जैसे घी और काठ से अग्नि बढ़ती ही है, उसी प्रकार यह काम भी भोगने से बढ़ता ही है, इस जीवन विनाश की प्रक्रिया गीता में निम्न प्रकार है - **ध्यायतो विषयान्पुन्सः संगस्तेशूपजायते, संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।** (गीता ३/६३)। **क्रोधाद्भावति सम्मोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः, स्मृतिभ्रन्शाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।** (गीता ३/६२)। मनुष्य विषयों का चिंतन करने मेंआसक्त हो जाता है, उससे विषयों को भोगने की कामना उत्पन्न होती है। इसी में क्रोध स्थाई बन जाता है। काम और क्रोध से मोह पैदा हो जाता है। मोह के कारण ज्ञान-विज्ञान सब नष्ट हो जाते हैं और इसी से मनुष्य का बुद्धि, विवेक नष्ट हो जाता है और मनुष्य जीवन का नाश हो जाता है।

अतः श्रीकृष्ण कहते है कि मनुष्य के इन्द्रिय, मन और बुद्धि में इस काम भावना का निवास हो जाता है, इसलिए इन्द्रियों और मन का नियंत्रण करके इस ज्ञान-विज्ञान के विनाशक शत्रु को मार डालना चाहिए।

## परम धाम का द्वार

**काम क्रोध और लोभ का, सदा करो तुम त्याग।**
**कभी कसी भी जीव से, रखो न अनुराग॥**
**रखो न अनुराग, प्रभु का नाम जपा कर।**
**अहंकार व द्वेष-भाव से, दूर रहा कर॥**
**पाठक की यह विनय, कर्म यदि शुद्ध करेगा।**
**परम धाम का द्वार, सदा ही खुला रहेगा॥**

thearyasamaj.org

# हमारी नीति आचार-परम्परा

भारत अति प्राचीन समय से ही विश्व का नैतिक तथा आध्यात्मिक गुरु रहा है। हमारा नैतिक स्वरुप अध्यात्मिक स्वरुप के अधीन है। वर्तमान कर्म का बीज कालान्तर में अंकुरित होता है, यही धारणा हमें अनैतिक कर्मों से बचाए रखती है। हमारे यहां मनीषी महापुरुषों के अवतारों का उद्देश्य संसार को नैतिक शिक्षा से समन्वित करना तथा धर्म की व्यवस्था करना रहा है। जन-जन से परिवार, परिवार से समाज और समाज से देश अथवा राष्ट्र बनता है, जिसका शासक और नियामक एक राजा होता है। राजा भी नैतिक नियमों से बंधा होता है। नीति के प्रादुर्भाव का इतिहास सृष्टि से ही है। मनीषियों से हमें नैतिक आचरण की परम्परा प्राप्त हुई है। मनीषीजनों के अनुभवों का हम यही लाभ उठाए तो हमें हर समस्या का समाधान मिल जाता है। हमारे वेद नैतिक आचरण के मूल स्रोत हैं। हमें उनमें मनुष्य, देश, परिवार तथा समाज के सुखी होने की उच्च विचारधारा का प्रवाह मिलता है, जैसे **अनुवतः पितुः** - पुत्र-पुत्र पिता का अनुवर्ती। **माँ भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्**- भाई भाई से द्वेष न रखें।

**अतिथि देवो भव**- अतिथि देवता के समान होता है। अतिथि की सेवा करो। **सं गच्छध्वं सं वदध्वम्** - मिलकर चलो, मिलकर बोलो। इसी प्रकार वेद की ऋचाओं में नीति के सुंदर उपदेश व्याप्त है। जैसे **असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, सह नाववतु सहनो भुनक्तु, धर्मों रक्षति रक्षितः, माताः भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः** - भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ। जैसी हितैषी धरोहर में थाती में प्राप्त है। संस्कृत साहित्य में नैतिक आचरण की मंदाकिनी बहती है। आवश्यकता है इसको पठन-मनन करने की और आचरण में लाने की ताकि हमारी नीति आचार परम्परा कायम रह सके।

***- राजेश कुमार आर्य, टाटीबन्ध रायपुर***

# सज्जन पुरुषों की एकरूपता

**घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धं, छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुकाण्डम्।**
**दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः क श्चनं कान्तवर्णं, न प्राणान्ते प्रकृति विकृतिर्जायते चोत्तमानाम्॥**

**भावार्थ** :- सुख और दुःख जैसे साथ-साथ रहते हैं - तथैव उत्तम और अधम पुरुष भी इस वसुन्धरा पर एक साथ ही रहते हैं। अधम तो अधम रहते ही है - परन्तु सज्जन पुरुष कभी भी किसी भी विपत्ति के आने पर विचलित नहीं होते। दृष्टिक्षेप कीजिए- आप चन्दन को चाहे कितनी ही बार, बारम्बार क्यों नहीं घिसते चले जावें क्या वह अपनी गन्ध छोड़ देगा ? कदापि नहीं। ऐसे ही आप साँटे (गन्ने) को लीजिए। उसके टुकड़े टुकड़े कर डालिए, बारम्बर काटते ही काटते छीलते चले जाइए क्या वह अपने स्वाद बदल देगा ? कभी नहीं, कभी नहीं। वह तो उत्तरोत्तर अपना मधुर स्वाद ही प्रदान करवाएगा।

और सोने को लीजिए - स्वर्ण को अधिक से अधिक अग्नि में तपाइए। क्या वह अपना सोने का रङ्ग गुण छोड़कर ताम्बे या पीतल में कभी परिवर्तित हो जावेगा ? कभी नहीं। सोना-सोना ही रहेगा अपितु वह तो और चमकेगा। इसी प्रकार उत्तम पुरुषों की प्रकृति स्वाभाविक निश्चलता का प्राणान्त होने पर भी परिवर्तन नहीं होता। उनकी एकरूपता जैसी है - सदैव वैसी ही रहेगी।

**- सुभाषित सौरभ**

thearyasamaj.org

# आत्म निरीक्षण एक मुलाकात स्वामी दयानन्द से

- **कन्हैयालाल आर्य**, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

प्रातःकाल का समय था, दरवाजे पर खटखटाहट हुई। इतने प्रातः कौन आ सकता है। कितनी ही आशंकाओं से भरा हुआ मैं द्वार खोलता हूं, क्या देखता हूँ कि एक संन्यासी मुझे देखकर जिज्ञासा भाव से मुस्करा रहा है। अभी मैं न तो गहरी नींद में था और न स्पष्टतः जागा। यह क्या ? एक तेज रोशनी मेरी आंखों में पड़ती है, मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं आ रहां था कि जिस व्यक्ति की हर जगह पर जय-जयकार बोली जा रही है। वह विशालकाय संन्यासी मेरे सम्मुख खड़ा है। वह संन्यासी मन्द-मन्द मुस्करा रहा है और मैं असमंजस में पड़ा हुआ कभी अपने आपको और कभी उस संन्यासी को देख रहा हूँ। मुझे विश्वास नहीं आ रहा था। अरे ! उन्हें तो स्वर्ग सिधारे १३१ वर्ष हो चुके हैं। वे इस रुप में कैसे आ सकते हैं ? मैंने अपने आपको को संभाला और वे संन्यासी मुस्कुराते हुये कहने लगे, आर्य जी ! घबराने की कोई बात नहीं। मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती हूं। उनके ऐसा कहते ही मैं अचम्भे में पड़ गया, परन्तु इससे पूर्व मैं और अधिक परेशानी अनुभव करता उन्होंने कहा - आर्य जी, मैं आपके सामने कुछ प्रश्न रखना चाहता हूँ। उनके मुझे उत्तर दीजिये। यह कहते ही वह मेरे कन्धे पर हाथ रखकर धीरे-धीरे चलते हुए मेरे अतिथि गृह तक पहुंच गये और मुझे अपने सामने बिठाकर ये प्रश्न करने लगे :-

१. मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल आपके हाथों में दी थी, क्या वह मशाल जल रही है या बुझने के कगार पर है ?

२. जिस जाति-पाति का मैंने जीवन भर विरोध किया था, क्या तुम उन्हीं जाति सूचक का प्रयोग करके डींग नहीं मारते हो ?

३. जिन नियमो-उपनियमों के आधार पर मैने आर्यसमाज की नींव रखी थी क्या तुम इस नींव को खोखला करने में नहीं लगे हो ?

४. मैंने तुम्हे श्रेष्ठ सीधा-सच्चा व वेद मार्ग दिखाया था जो प्रभु का आदेश, उपदेश और सन्देश है, उसका तुम्हें आधार दिया था। उसके प्रचार-प्रसार का कार्य छोड़कर क्या तुम भी आर्यसमाज के रुप में भवनो, दुकानों, स्कूलों और बारात घर की पंक्तियां नहीं सजा रहे हो ?

५. मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल तुम्हारे हाथों में दी थी, क्या तुम उसे आर्यसमाज मंदिर में बने स्कूल, दुकान, बारात, घर और औषधालय के कोने में रखकर - **'वेद की ज्योति जलती रहे'** व **'ओ३म् का झंडा ऊंचा रहे'** बोलकर शांति पाठ नहीं करा रहे हो ?

६. साप्ताहिक कार्यक्रम को तुमने इतना नीरस बना दिया है कि हवन किया, दो भजन बोले, सूचना दी और कार्यक्रम की इति श्री कर दी। क्या इसी हेतु मैंने आर्यसमाज की स्थापना की ? वेद पढ़ने-पढ़ाने की बात तो दूर तुमने सुनना-सुनाना भी बन्द कर दिया।

७. क्या तुम महापुरुषों के चित्रों के नीचे कव्वालियों और लड़कों और लड़कियों के नाच नहीं कर रहे हो?

८. भजन सन्ध्या के नाम पर मूर्ति-पूजा जैसे भयंकर पाप को क्या तुम नहीं कर रहे हो ?

९. वेद प्रचार की बजाय गीता ज्ञान की कथायें क्या तुम्हारे आर्यसमाज में नहीं हो रही है ? आज गीता कथा करने वाले विद्वान् तुम्हारे आर्यसमाजों में अधिक सम्मान प्राप्त कर रहे है और वेद कथा कहने वाले विद्वान् उपेक्षित ! ऐसा क्यों ?

thearyasamaj.org

१०. जिस सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को मैंने जन कल्याण व वेद प्रचार हेतु बड़े परिश्रम से लिखा था, उसे घर-घर पहुंचाने की अपेक्षा क्या अपने पुस्तकालयों की अलमारियों में तुमने बन्द नहीं कर दिया है ?

११. मैंने जिस पाखण्डों, गुरुडम, अज्ञान आदि को दूर करने के लिये सत्रह बार विष पीया, क्या तुम उन्हीं पाखण्डों का शिकार नहीं हो गये हो ? क्या तुम्हारे प्रत्येक के घर में वैदिक विचार के स्थान पर गुरुडम ने स्थान नहीं ले लिया है ? क्या तुमने कभी वैदिक ज्ञान प्राप्त कर अज्ञानता को दूर करने के लिए समय निकाला है ?

१२. क्या तुम पद-मान-महत्व और सत्ता के लिए दिन-रात योजनायें नहीं बनाते रहते हो ? तुम गुटबाजी में ऐसे फंसे हो कि दूसरे पक्ष का व्यक्ति कितना ही वैदिक धर्म का अनुयायी, स्वाध्यायी, सेवाभावी, सत्संगी क्यों न हो, तुम्हें इसीलिए नहीं भाता कि वह तुम्हारे गुट का नहीं है। क्या यह बात ठीक है ?

१३. तुम्हारी इस चुनावी जंग को देखकर श्रद्धालु, भावनाशील और विचारों, सिद्धान्तों को प्यार करने वाले क्या तुम से अलग नहीं होते जा रहे हैं ?

१४. जिस सहशिक्षा और अंग्रेजियत की शिक्षा का मैं विरोधी रहा, वही सब कुछ मेरे नाम पर खड़े किये गये डी.ए.वी. स्कूलों व समाज मंदिरों में क्या तुम नहीं कर रहो हो ? क्या तुम गुरुकुल खोलने के स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा के आधुनिक स्कूल खोलने पर अपनी ऊर्जा नहीं लगा रहे हो ?

१५. जिन दैनिक यज्ञ आदि पांच महायज्ञों को प्रतिदिन न करने वालों को कृतघ्न और पापी कहा जाता है, क्या तुमने उन यज्ञों को त्याग नहीं दिया ?

१६. क्या तुम आधुनिकता की होड़ में आश्रमों व गुरुकुलों में मेरे द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रमों को तिलांजलि नहीं दे रहे हो ?

१७. मैंने सुना है प्रतिदिन लाखों गायों की हत्या यहां पर हो रही है। क्या तुमने कभी उसका प्रतिवाद किया ? क्या प्रतिदिन तुम गौ माता की जय हो, गौ की रक्षा हम करेंगे, नारे लगाकर मुझे धोखा नहीं दे रहे हो? क्या तुम्हारे घर में तुम और तुम्हारे बच्चे गाय का दूध सेवन करते हैं ? क्या गोशालाओं में कभी तुमने सहयोग किया ? क्या तुम स्वयं बूढ़ी गाय को थोड़े से धन के लालच के लिए कसाइयों के हाथ नहीं बेच देते हो ?

१८. जिस मूर्ति-पूजा का विरोध करने के कारण और किसी लोभ में न पड़कर मैं विरोधियों का कोपभाजन बना हूँ क्या तुम्हारे ही आर्यसमाज मन्दिरों में मेरी ही मूर्ति पर हार नहीं चढ़ाने लगे हो ? और तो और थोड़े से धन के लालच में कुछ धनपतियों को जिन्हें तुम जानते हो कि यह मूर्तिपूजक है, फिर भी उन्हें आर्यसमाज के पदाधिकारी बनाकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को शान्त नहीं कर रहे हो ?

१९. जिन मांस-भक्षकों के घर पर पानी पीने से भी मैंने मना किया था, क्या तुम उन्हीं मांसाहारियों और शराबियों को मालायें पहनाकर समाज के सदस्य बना कर आर्यसमाज को क्लब बनाने का प्रयास नहीं कर रहे हो ?

२०. पचास वर्ष की आयु पश्चात वानप्रस्थ और ७५ वर्ष की आयु के पश्चात् संन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर समाज की सेवा का जो संकल्प मैंने तुम्हें वेदानुसार बताया था, क्या तुम ने उसके पालन में जरा भी रुचि दिखाई ?

२१. अपने जीवन में साधना, स्वाध्याय की बजाय जीवन भर धन कमाने, भौतिक सुविधाओं, वासनामय जीवन व्यतीत करना, क्या तुमने अपने जीवन का उद्देश्य नहीं बना रखा है ?

२२. सन्ध्या के छः मन्त्रों (मनसा परिक्रमा मन्त्र) में **'यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः'** को प्रातः तोते की तरह रटते तो तुम रहे, क्या तुमने ईर्ष्या-द्वेष के भाव को प्रभु के प्रति समर्पित किया ?

२३. जो मैंने तुम्हें आर्यसमाज के माध्यम से श्रेष्ठतम विचारों का चिन्तन दिया था, क्या तुमने उसे बहुत संकीर्ण एवं सीमित नहीं कर दिया है ? क्या तुमने आर्यसमाज

thearyasamaj.org

मन्दिरों को जलसे, जुलूसों व लंगरों तक सीमित नहीं कर दिया ?

२४. क्या तुम किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मृतक व्यक्ति के वजन के बराबर घी और सामग्री डालने की बजाय एक या आधा किलो घी और आधा या एक किलो सामग्री डालकर मृतक के शव को अग्नि को अर्पित नहीं कर रहे हो ?

२५. क्या तुम चौथे के दिन मृतक की अस्थियां अलग कर और राख अलग कर हरिद्वार ले जाने का काम नहीं कर रहे हो ? जिस हरिद्वार को मैंने हाड़का द्वार कहा था क्या तुम उसी हरिद्वार में अस्थियां ले जाकर पण्डे-पुजारियों के हाथों नहीं लुट रहे हो ?

२६. श्रद्धांजलि दिवस के अवसर पर क्या तुम मृतक के चित्र पर माला नहीं चढ़ा रहे हो ? उसके चित्र के सामने फूल रखकर लोगों से मूर्तिपूजा नहीं करा रहे हो ? किसी देवी-देवता एवं मृतक के चित्र को रखकर उन पर पैसे नहीं चढ़वा रहे हो ? यदि ऐसा कर रहे हो तो क्या तुम मेरी हत्या नहीं कर रहे हो ?

२७. क्या तुमने अपने बच्चों की जन्मपत्रियां बनवाना प्रारम्भ नहीं कर दी ? जिन जन्मपत्रियों को मैंने शोकपत्री कहा था उन्हीं जन्मपत्रियों को बनवाकर क्या तुम ढोंग और पाखण्ड में फंसते नहीं जा रहे हो ? क्या तुमने अपने बच्चों को आर्य संस्कारों से संस्कारित किया ?

२८. तुम सदैव तो अपने आप में आर्यसमाज का लबादा ओढ़े रहे हो, परन्तु उस समय तुम्हें क्या हो जाता है जब तुम अपने किसी बच्चे का विवाह करने जाते हो तो मुहूर्त पूछते रहते हो ? ज्योतिषियों के चक्कर में पड़कर तुम अपने बच्चों का भविष्य खराब नहीं करते हो ?

२९. अब तो तुम अपने पुत्र/पुत्री के गुण और जहां उनका विवाह करना हो उसकी पुत्री/पुत्र के गुण मिलाने लगे हो। क्या यह पाखण्ड की पराकाष्ठा नहीं है ?

३० कोई भी जीव इस संसार में आता है वह अपने कर्म साथ लाता है परन्तु तुम उसके विवाह के समय पाखण्डी पण्डितों के कहने से मंगली, मंगला आदि कहकर उन बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ नहीं करते हो ?

३१. मैंने सत्यार्थ प्रकाश में विवाह के समय पुत्र और पुत्री के लिए कौन-कौन सी सावधानियां बताई थी ? माता और पिता की कई पीढ़ियां छोड़कर विवाह करने की बजाय तुमने अपने बच्चों के विवाह अत्यधिक निकट सम्बन्धियों के साथ करने प्रारम्भ नहीं कर दिये हो ?

३२. मैंने तुम्हें अपनी संतानों में अच्छे-अच्छे संस्कार डालने की प्रेरणा की थी, क्या तुमने कभी अपने बच्चों को धर्म, कर्म की बात, आचार व्यवहार की बात, राष्ट्र प्रेम से संबंधित वीरों की गाथायें सुनाने का प्रयास किया ? यदि नहीं तो क्या तुमने मेरे साथ विश्वासघात नहीं किया ? तुमने उनके हाथों में वैचारिक क्रांति क भाव भरने की बजाय उनके हाथों में मोबाइल, लैपटाप, टेबलेट दे दी, जिससे वह इनके लाभों की बजाय इसमें छिपी गन्दगी देख देखकर अपने ब्रह्मचर्य का नाश कर रहे हैं ? कभी इस पर विचार किया ?

३३. मैंने तुम्हें अन्तरजातीय विवाह करने का आदेश दिया था, परन्तु सोचो कि क्या तुम जाटवाद, अहीरवाद, बनियावाद, पंजाबीवाद आदि वादों में नहीं पड़ गये हो ? क्या तुम विवाह के समय गुण, कर्म, स्वांभाव देखने की बजाय जातिवाद को महत्व नहीं देने लग गये हो।

**आर्य जी,**

क्या आज आर्यसमाज के अधिकांश लोग मेरे नाम को व्यापार बनाकर धन बटोरकर मौज मस्ती नहीं ले रहे हैं ? आर्यसमाज मन्दिरों की दशा, वातावरण व परिस्थिति देखकर दुःख होता है। क्या मेरे किए हुए कर्मों का प्रतिदान यही है ? क्या यही स्मरण है ? क्या यही श्रद्धांजलि है ? यदि यही है तो आर्यों ! मुझे क्षमा करो ! मुझे यह आशा न थी जिस रुप में आज आर्यसमाज है और जिस दिशा में जा रहा है, इसका यह हाल होगा। मैं लज्जित होकर अपनी आंखे धरती में गाड़े हुए था, क्योंकि जो भी प्रश्न स्वामी दयानन्द जी ने उठाये थे वह सब सत्य थे, मेरे पास कोई उनका उत्तर नहीं था। मुझे

thearyasamaj.org

अधिक परेशानी की स्थिति में देखकर स्वामी जी एक बार पुनः मुस्कराये और कहने लगे निराश होने की कोई बात नहीं। निराशा से कुछ नहीं मिलेगा आज और अभी यह निर्णय करो कि मैं स्वयं सुधरने का प्रयास करूंगा। पूरे परिवार को सुधारूंगा, तो वह दिन दूर नहीं जब मेरी वेद रुपी ज्वाला एक बार मशाल बनकर संसार का कल्याण करेंगी। यह कहते ही वह उठे और बाहर चले गये। मेरी आंखों में आंसू थे। इतनी देर में श्रीमतीजी आती हैं और कहती है कि उठिये प्रातःकाल के ५ बजे हैं, कब तक सोते रहोगे ?

मैं चौंक उठा। अरे ! यह क्या ? यह तो एक स्वप्न था परन्तु इस स्वप्न को मैं अपनी सम्पत्ति बनाकर संजाये रखना चाहता हूँ। स्वप्न में ही सही, जो प्रश्न स्वामी दयानन्द जी ने मुझसे किये ? उनके अनुसार मैं अपने जीवन में कुछ परिवर्तन ला सकूं, इसी विश्वास के साथ मैं उठा और दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गया।

मैं सोचने लगा कि आज का यह स्वप्न एक स्वप्न बनकर रह जायेगा या मैं अपने में कुछ परिवर्तन भी लाऊंगा। यदि मैं अपने जीवन में इन उठाये हुए प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सका तो मैं अपने जीवन को सार्थक बना सकूंगा। मुझे अनुभव हुआ कि यह केवल मेरा स्वप्न नहीं बल्कि उन सभी निष्ठावान् आर्यों की एक पीड़ा है जो मेरे स्वप्न के माध्यम से सामने आई है। प्रभु से प्रार्थना है कि हमें इतनी शक्ति दे कि हम आर्यजन इनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सकें। ताकि हम आर्यसमाज के लिए समस्या नहीं समाधान बन सकें और आर्यसमाज को स्वामी दयानन्द सरस्वती के सपनों का संगठन बनाये रख सकें।

*पता : ४/४५ शिवाजीनगर, गुड़गांव (हरियाणा)*

## पुरुषार्थ के भेद

**जो अप्राप्त वस्तु की इच्छा करनी, प्राप्त का अच्छी प्रकार रक्षण करना, रक्षित को बढ़ाना और बढ़े हुए पदार्थों का सत्यविद्या की उन्नति में तथा सबके हित करने में खर्च करना है, इन चार प्रकार के कर्मों को पुरुषार्थ करते हैं।**

### एक अविस्मरणीय दृश्य

# "पहले मुझको गोली मारो"

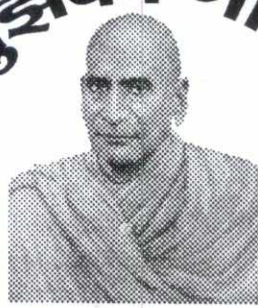

ब्रिटिश तंत्र की तानाशाही के विरुद्ध आन्दोलन।
का विशाल जन जुलूस निकाला स्वयं किया संचालन॥
अहा ! चांदनी चौक दृश्य वह नयनों में छा जाता।
जुलूस रोकता सैनिक दल, संगीनों को चमकाता॥
और सिंह गर्जना वह, कानों में है गहराती।
पहले मुझको गोली मारो, खोल खड़ा था छाती॥
वह निर्भीक, सुदृढ़ जननेता श्रद्धानन्द हमारा।
त्याग, समर्पण, जनसेवा हित जिसने तन था धारा॥
ओजपूर्ण मुखमण्डल, गर्जन का प्रभाव गहराया।
जनता के तन, मन में अद्भुत अमित जोश भर आया॥
संन्यासी का प्रखर तेज, तप देख झुकी संगीनें।
रायफलों की नलियों में मुख जमीं ओर कर दी ने॥
रुद्ध मार्ग खुल गया, जुलूस ने आगे कदम बढ़ाया।
वृहद भीड़ ने आर्य तुम्हारे जय जयकार लगाये॥
धन्य धन्य संकल्प, सुदृढ़ साहस नेतृत्व तुम्हारा।
मन श्रद्धानन्दी चरणों में करता नमन हमारा॥
अहा ! दृश्य वह जब भी मेरे नयनों में घिर जाता।
मन मेरा श्रद्धा से श्रद्धानन्द के प्रति भर जाता॥

- दयाशंकर गोयल,
१५५४-डी, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

thearyasamaj.org

# प्रेरणात्मक प्रणम्य-धर्मनिष्ठा

लेखक : सी.ए. राजकुमार

**आर्यसमाज की सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक विचारधारा का आज पहले से भी अधिक सार्थकता के साथ प्रचार हो सकता है मगर यदि हमारे समस्त अधिकारी एवं विद्वान् अपनी समस्त एषणाओं को त्यागकर मिशनरी भावना से प्रचार करें।**

आर्यसमाज के स्वर्ण युग का कारण यह था कि उस समय हमारे पास पंडित गुरुदत्त, पंडित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि महर्षि के अनेक दीवानें थे, जिन्होने अपना तन, मन और धन अपने मिशन के लिए समर्पित कर दिया। उन्होने पुत्रैषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा से ऊपर उठकर निष्काम-भाव से कार्य किया। आज भी उसी भावना से कार्य करने की आवश्यकता है। प्रेरणा के रुप में मैं पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी तथा मां सत्यप्रियायति जी का उदाहरण देना चाहता हूँ, जिनमें आज भी वही मिशनरी भावना हमें दिखाई देती है। उनका पूरा जीवन ही मानों देव दयानन्द जी के लिए समर्पित रहा है। हमने उन्हें बहुत ही समीप से देखा-परखा है, वे पूर्णतया एषणारहित, त्यागी, समर्पित, विनम्र, निरहंकारी और शालीन है। अपनी अद्भुत शैली से वे किसी को भी एक बैठक में वैदिक धर्मी बनाने की क्षमता रखते हैं। हम लोग पूज्य महात्मा जी की कुटिया में बैठे थे तो हमारे आग्रह पर उन्होने कुछ प्रसंग सुनाए जो उन्होने अपनी आत्मकथा 'पुल पर जीवन' में भी लिखे हैं। विभिन्न प्रान्तीय सभाओं द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस के शताब्दी कार्यक्रम धूमधाम से मनाए जा रहे थे। ऐसा ही एक आयोजन हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भी शिमला में मनाया गया था। उस समय आचार्य चैतन्यमुनि जी सभा के उपमंत्री थे। उन्हें शताब्दी समारोह में आने वाले लोगों की आवास व्यवस्था का कार्यभार सौंपा गया था। इस कार्य को उन्होने कितनी निष्ठा और लगन के साथ किया होगा इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक दिन सायंकाल लगभग साढ़े आठ बजे ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी ने उनसे पूछा कि आपने रात्रि का भोजन कर लिया या नहीं ? उनके इस प्रश्न पर चैतन्यमुनि जी को स्मरण आया कि रात्रिकालीन भोजन की बात तो दूर रही उन्होने तो प्रातःकाल से अब तक कुछ भी मुंह में नहीं डाला है। उन्होने आर्यसमाज सुन्दरनगर तथा वर्षों आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री, वरिष्ठ उपप्रधान और कार्यकारी प्रधान के रुप में निष्कामभाव से की गई सेवा के बारे में भी चर्चा की। उन्होने बहुत ही भावविभोर होकर कहा कि किस प्रकार उन्होने तथा उनके समूचे परिवार ने सभा के लिए बहुत ही कठिन परिस्थितियों में समर्पित भाव से कार्य किया है तथा सभा की पत्रिका **'आर्यवन्दना'** को अपने बच्चों की तरह पाला था... उन्होने जम्मू कश्मीर के बार्डर क्षेत्र तथा गुजरात, महाराष्ट्र आदि अनेक प्रान्तों में किन कठिन परिस्थितियों में वेद प्रचार किया है, हम सुनकर आश्चर्यचकित से रह गए, वह अपने आप में अनुपम एवं अनुकरणीय है ...।

उन्होने बताया कि सन् १९९६ में आर्यसमाज भरवाई के ८१वें वार्षिक उत्सव में हम २४से २९ जुलाई तक रहे। हमारी ठहरने की व्यवस्था आर्यसमाज में ही की गई थी। मगर बरसात के कारण दरियां पानी से भीगी थी तथा बिछाने के लिए तलाई, ओढ़ने के लिए कोई चद्दर या तकिया आदि कुछ भी नहीं था। हम जैसे-कैसे सो तो गए मगर नीचे से गीलापन इतना कि हमारे पहने हुए कपड़े भी गीले हो गए, नींद तो कहां आनी थी। मंच पर से एक सूखी दरी बिछाई और आसनों को तकिया बनाया नगर तभी तितलियों के आकार के कुछ बड़े-बड़े जीव आकर हमारे चेहरों पर मंडराने लगे। जैसे-तैसे रात व्यतीत हुई। प्रातःकाल शौचादि के लिए खुले में जाना था मगर साथ पानी ले जाने के लिए कोई भी पात्र आदि नहीं था। सोचा चलो अब जाना तो है ही पानी बाद में ले लेंगे। ज्यों ही सड़क के नीचली ओर उतरने लगे तो रेतीली भूमि पर से दोनों के ही पांव फिसले और संभलने का कोई मौका न मिलने के कारण बहुत नीचे तक पहुंच गए। वहां से सड़क तक पहुंचना और भी अधिक कठिन हुआ, क्योंकि चौपाए होकर जितना ऊपर चढ़ते थे, रेतली भूमि पर फिसलकर उतना ही नीचे पहुंच जाते थे। जैसे-तैसे सड़क तक पहुंचे और पीने के लिए एक सुराही में रखे

thearyasamaj.org

गए जल से आर्यसमाज भवन के नीचली ओर जाकर पानी का प्रयोग किया। अगले दिन बिस्तर आदि की व्यवस्था हो सकी। उसके बाद एक बार पुनः जब गए तो भी ठहरने की व्यवस्था ठीक न होने के कारण मुझे बहुत तेज बुखार हो गया। बुखार अगले दिन बढ़ गया, मगर उसी स्थिति में उस दिन तीन प्रवचन दिए, जिससे बुखार और अधिक तेज हो गया। उधर सत्यप्रिया जी के दांत में असहनीय दर्द हो गया मगर वे भी भजन गाती रहीं। कहीं कार्यक्रम खराब न हो जाए इस डर से हमने पी. डब्ल्यू.डी. के विश्राम गृह में अपने ठहरने की व्यवस्था की तथा इसका व्यय-भार आर्यसमाज पर नहीं डाला (यह पूर्ण सत्य है कि पूज्य महात्मा जी ने आज तक किसी से कुछ नहीं मांगा है)।

उन्होने एक और प्रसंग इस प्रकार सुनाया कि पंचकूला के आर्यसमाज सैक्टर-९ में सन् १९९७ में १० से १६ नवंबर तक हमारा कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में आचार्य रामप्रसाद वेदालंकारजी तथा आचार्य विश्वदेव जी आदि अनेक अन्य विद्वान् भी पधारे हुए थे। आचार्य रामप्रसाद जी हमसे बहुत ही अधिक प्रेम करते थे। हमने देखा कि न तो लोग ही उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं और न वे स्वयं ही ... एक दिन ठण्डी पुरियां खाने लगे तो सत्यप्रियाजी ने उनके खानपान तथा स्वास्थ्य का ध्यान रखा। आचार्य रामप्रसाद जी एक दिन मेरे प्रवचन के बाद बोलने के लिए आए तो बहुत देर तक हमारी प्रशंसा करते रहे...उन्होने यह भी कहा कि चैतन्यजी तो अभी पूरी तरह चले नहीं हैं जब चलेंगे तो हम लोगों से तो बहुत आगे निकल जाऐंगे... एक दिन रात्रि को उनके साथ हम अकेले में बैठकर रात के लगभग २ बजे तक बातचीत करते रहे थे.... एक दिन सभी विद्वान् भी उनके कमरे में देर रात तक बैठे बातचीत कर रहे थे तो उन्होने कहा कि सभी अपनी-अपनी प्रचार यात्राओं में आए कष्टों के अनुभव बताएं....देखते हैं कौन कष्ट सहने में प्रथम आता है, आचार्य विश्वदेव जी ने बताया कि एक बार वे किसी कार्यक्रम पर जा रहे थे तो मार्ग में बहुत बड़े-बड़े ओले गिरने लगे.. उनके सिर पर ओलों की चोट पड़ने लगी, उन्होने अटैची अपने सिर पर रखी और ओलों से अपना बचाव करते हुए कार्यक्रम पर पहुंचे। आचार्य रामप्रसाद जी ने बहुत ही हंसते-हंसते हुए सुनाया कि एक बार उन्हें ऐसे बिस्तर पर सुला दिया गया था जिसकी रजाई में छोटे-छोटे चूहों के बच्चे थे। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद चूहे उछल-उछल कर बाहर निकलते रहते थे। उन्होने एक अन्य घटना सुनाते हुए कहा कि एक कार्यक्रम पर जाते हुए उन्हें अचानक एक स्थान पर रात पड़ गई और उन्हें रात किसी पुराने खण्डरनुमा स्कूल में बितानी पड़ी, मैने कहा कि हमारे साथ तो इससे भी बहुत बड़ी-बड़ी बीसियों ही घटनाएँ घटी हैं। उनमें से हमने केवल दो ही घटनाएँ (लेख लम्बा हो जायेगा, अतः वे घटनाएँ नहीं दे पा रहे हैं) सुनाई तो आचार्य रामप्रसाद जी ने एकदम गंभीर होकर कहा कि चैतन्य जी आप प्रथम आ गए... अरे इतने कष्ट ...।

२००८ में आर्यसमाज ३२-डी, चंडीगढ़ का २५ मई से १ जून तक कार्यक्रम था मगर मुझे कुछ दिनों से ज्वर था और २१मई को ज्वर ने भयंकर रुप धारण कर लिया। अपने पारिवारिक डा. रमेश जी को दिखाया तो उन्होने खून आदि टेस्ट करने के बाद कहा कि आपको तो भयंकर रुप से टाईफाईड है, अतः आप कार्यक्रम पर बिल्कुल न जाएं, आपका जीवन बहुत कीमती है। उधर श्री प्रेमजी को चण्डीगढ़ फोन करके स्थिति बताई तो उन्होने कहा कि हमारा कार्यक्रम खराब हो जाएगा। मुझे स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, स्वामी दर्शनानन्द आदि को स्मरण हो आया, जिन्होने विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए स्वयं को आहुत कर दिया। बहुत विचार करने के बाद अन्ततः जाने का ही निर्णय लिया। स्वयं कार चलाकर हम चण्डीगढ़ के लिए २४ मई को रवाना हो गए मगर परीक्षा कड़ी थी, मार्ग में बनेर की चढ़ाई पर एकान्त जंगल में कार का टैंकर पंचर हो गया। हमें स्वयं टैर बदलना आता नहीं था, यदि जीप को वहीं जंगल में अकेला छोड़कर कुछ दूर पैदल चलकर और फिर एक ट्रक पर बैठकर आगे जाकर बहुत अनुनय-विनय करके तथा अधिक पैसे देकर एक मैकेनिक को लाया मगर उसने पूरा काम भी नहीं किया... जैसे-तैसे आगे बढ़े ही थे कि रास्ते में ट्रैफिक पुलिस का सामना हो गया। अतः हमारा चालान कर दिया गया। जल्दी-जल्दी में तथा परेशानी के कारण हम बैल्ट लगाना भूल गए थे। अतः हमारा चालान कर दिया गया। इस सबका सबसे बड़ा कुपरिणाम यह हुआ कि हमें चण्डीगढ़ पहुंचने में बहुत देर हो गई तथा उस शहर की भूल-भूलैया में दिन को कार चलाना कठिन हो जाता है और रात्रि को कार चलाना तो मेरे लिये बहुत कठिन हो जाता। चण्डीगढ़ पहुंचते

thearyasamaj.org

पहुंचते हमें बहुत रात हो गई। फिर भी पहुंचना तो था ही सो जैसे-तैसे आर्यसमाज पहुंच गए। हमारे पहुंचने पर सभी अधिकारी आदि बहुत प्रसन्न हुए। यज्ञ का ब्रह्मा भी मैं ही था।

मई २५ को प्रातः यज्ञ तथा प्रवचनादि ठीक प्रकार से निभ गया मगर प्रवचन समाप्त होते ही मेरा शरीर इतनी बुरी तरह से कांपने लगा कि मंच पर बैठना असंभव हो गया। मैं उठकर सीढ़ियों की रैलिंग का सहारा लेते-लेते कमरे तक बहुत ही कठनाई से पहुंच पाया। कमरे में पहुंचने पर शरीर और भी अधिक जोर-जोर से कांपने लगा। इतने में सत्यप्रियायति जी, सेवक कश्मीरजी तथा कुछ अन्य अधिकारी भी मेरे कमरे में आ गए। मेरा शरीर बहुत ही बुरी तरह से कांप रहा था। मैं डाक्टर रमेश को फोन करने लगा तो मेरे बहुत बुरी तरह से कांपते हुए हाथ से मोबाइल भी नीचे गिर गया। स्थिति बड़ी विकट थी। सत्यप्रियाजी ने डा. रमेश जी से बात की तो उन्होंने फोन पर ही कुछ दिशा-निर्देश दिए और तद्नुसार उपचार करके अस्थाई रुप से मैं कुछ स्वस्थ हो गया मगर जब रात्रि के प्रवचन के बाद भी स्थिति वैसी ही हो गई तो सभी के लिए बहुत चिन्ता का विषय हो गया। मुझे चिन्ता यही थी कि दवाईयां बताई जो डा. रमेश जी ने बताई थी। उन्होंने यही कहा कि आपको ऐसी स्थिति में कार्यक्रम पर नहीं आना चाहिए था, आपके शरीर की स्थिति बिल्कुल भी ठीक नहीं है।

ईश्वर की कृपा से जैसे-कैसे दवाईयों के सेवनादि के आधार पर कार्यक्रम ठीक प्रकार से सम्पन्न हो गया, तो मैने परमात्मा का बहुत धन्यवाद किया तथा सभी अधिकारी भी प्रसन्न हुए एवं ऐसी स्थिति में भी कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु हमारी प्रशंसादि करने लगे। हमारे साथ ऐसी स्थितियां पहले भी उपस्थित हुई थीं, मगर हमने वेदप्रचार को प्रमुखता देते हुए कभी अपने हित-अहित की चिन्ता नहीं की।

उसके बाद ४ से १५ जून तक मोगा में हमारे संचालन में कन्याओं का वैदिक चेतना शिविर था। सुन्दरनगर आकर डॉ. रमेश जी के पास चेक कराने गया तो उन्होंने कहा कि मैं आपको ऐसी स्थिति में सुन्दरनगर से बाहर जाने की बिल्कुल अनुमति नहीं दे सकता। आपको पूर्ण विश्राम करना चाहिए। बात यहां भी कार्यक्रम निभाने की थी। सोचा यदि मैं न गया तो शिविर का क्या होगा ? बहिन इन्दुजी भी दूरभा, पर बार-बार यही आग्रह कर रही थी। डॉ. रमेश जी को यह आश्वासन देकर मैं स्वयं कार नहीं चलाऊंगा तथा वहां पर वे लोग मेरी देखभाल कर लेंगे आप चिन्ता न करें। दवाईयां लेकर हम लोग लगभग बारह बजे मोगा के लिए निकल पड़े। कार चलाने के लिए अनुरागजी को साथ ले लिया। मैं कार की पिछली सीट पर लेट गया और मार्ग में दवाईयों का सेवन करते-करते हम मोगा पहुंचे तो बहिन इन्दुजी एवं श्री केवलकृष्ण जी बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगा कि यदि आप न आते तो हमारे लिए बहुत कठिनाई हो जानी थी। हालांकि वहां तीन सत्रों में प्रवचनादि करने होते थे मगर ठीक खान-पान तथा नियमित दवाईयों का सेवन करते हुए कार्यक्रम ठीक प्रकार से चला। बीच में एक दिन प्रातःकाल के प्रवचन में थोड़ी कठिनाई हुई थी, उस दिन प्रवचान करते-करते ही बहुत जोर की उल्टी आई, जिससे प्रवचन बीच में ही छोड़ना पड़ा, फ़िर भी परमात्मा की कृपा से यह शिविर बहुत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

एक बार वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ गए हुए थे, वहां नजफगढ़ दिल्ली के कुछ लोग भी उन दिनों आए हुए थे। महात्मा जी ने उससे चर्चा कि २००६ में हम भी आर्यसमाज मेन बाजार नजफगढ़ में अक्टूबर १३ से १५ तक कार्यक्रम में गए थे। मैने कुछ दिन पूर्व ही दान्त उखड़वाया था, मगर उस ओर के पूरे ही मसूड़े पतली खिचड़ी भी नहीं निगली जाती थी, जिससे असहनीय दर्द थी। प्रवचन देने की बात तो दूर मगर मुझसे पतली भाग को इंजेक्शन व स्प्रे द्वारा सुन्न कर देते थे। कार्यक्रम इतना सफल रहा कि लोग निरन्तर समय बढ़ाने की मांग करते रहे और बढ़ाया भी गर, मगर अब मेरे जबड़ों को दो बार सुन्न किया जाने लगा.. एक दिन प्रवचन के दौरान ही एक युवा महिला खड़ी होकर अपनी हरियानवी भाषा में बहुत ही ऊंचे स्वर में मेरे प्रवचनों की प्रशंसा करते हुए कहने लगी कि ऐसे प्रभावशाली साहब इनके जबड़ों को तीन-चार बार सुन्न किया करें, हम इन्हें घण्टों सुनना चाहते हैं.... नजफगढ़ से आए उन सज्जनों में से एक सज्जन तुरन्त बोले कि वह डाक्टर मैं ही हूँ।

*पता : आर्यकुंज, कालांवाली, जिला-सिरसा, हरियाणा-१२५२०१*

**महात्मा धर्मात्मा गणयति**
**न दुखं न च सुखम्।**

thearyasamaj.org



# सिंगापुर से आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

- ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।
- २८ अक्टुबर २०१४ से १२ नवम्बर २०१४ तक सिंगापुर, बैंकाक, मलयेशिया देशों की यात्रा की। यद्यपि २ वर्ष पूर्व मैंने इन देशों की यात्रा की थी, किन्तु सा.आ.प्र.सभा के माननीय श्री सुरेशचन्द्र के विशेष आग्रह पर तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के कारण पुनः यात्रा का कार्यक्रम बना। सम्मेलनों में ३०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें यू.एस., यू.के., कनाडा, आस्ट्रेलिया, मारीशस आदि अनेक देशों के आर्य सज्जन भी सम्मिलित हुये। सिंगापुर आर्यसमाज की स्थापना को १०० वर्ष हो गये तथा बैंकाक आर्यसमाज ७५ वर्ष। हजारों किलोमीटर दूरदेशों में, जब वैदिक आर्य परम्परा वाले व्यक्तियों, परिवारों, समाजों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो हृदय में आनन्दातिरेक की अनुभूति होती है। कुछ छोटी-छोटी अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन सफल रहा।
- पाश्चात्य और पौर्व्य विकसित देशों की बाह्य चकाचौंध करने वाली भौतिक प्रगतिको देखकर अधिकांश, व्यक्ति प्रभावित होते हैं और वैसा ही बनने का विचार करते हैं, प्रयास भी करते हैं, किन्तु सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि न होने के कारण वे आन्तरिक स्थिति का अवलोकन नहीं कर पाते हैं और भ्रान्त धारणा बन जाती है कि ये सुखी हैं, शान्त हैं, सन्तुष्ट हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। बिना आत्मा-परमात्मा को जाने, सच्चे वैदिक ज्ञान के अनुरुप अपने जीवन को चलाये, बिना मनुष्य कितनी ही धन सम्पत्ति प्राप्त क्यों न करले, पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। दुःखों से घिरा रहता है।
- वैदिक ऋषियों ने ईश्वर का ध्यान, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्पुरुषों का संग, पुनर्जन्म, कर्मफल, समाधि, वैराग्य, व्रत, तप, संयम आदि आध्यात्मिक विषयों तथा सिद्धान्तोंको सांपराय शब्द से इंगित किया है, जो मनुष्य इन विषयों का ज्ञान और तत्सम्बन्धी आचरण नहीं करते हैं, वे मूढ़ संज्ञक मनुष्य होते हैं, ऐसे मनुष्यों की मान्यता यह होती है कि "This is the first and last life, There was no life before this life and there will be no life after this life" यही जीवन है, न इससे पूर्व जन्म था, न मरने के पश्चात् होगा। अपने इस चार्वाक/विवेचन/नास्तिक वादी सिद्धान्त के कारण अपनी बुद्धि, शक्ति, साधन, समय, चातुर्य, श्रम का पूर्ण रुप से इसी जीवन को, अधिकाधिक सामर्थ्यवान् बनाकर अधिकाधिक भोगों को भोगने का प्रयास करते हैं और इस एकांगी क्षेत्र में वे सफल हो जाते हैं। किन्तु इस जीवन के बाद सर्वथा विनाश है, अन्धेरा ही अन्धेरा है, दुःख ही दुःख है।
- जब किसी व्यक्ति-समाज-राष्ट्र का जीवन का लक्ष्य ही भिन्न होगा, तो दिशा भी भिन्न होगी, मार्ग भी भिन्न होगा, साधन भी भिन्न होंगे और शैली भी। बुद्धिमान व्यक्ति अन्य व्यक्ति के रुप, रंग, आकृति, बल, बुद्धि, सामर्थ्य, पद, प्रतिष्ठा, भौतिक, सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि को देखकर यह नहीं मान लेता कि यह पूर्ण सुखी है, शान्त है। पूर्ण सुखी होने की कुछ कसौटियां हमारे ऋषियों ने निर्धारित की है, यदि व्यक्ति उन कसौटियों पर खरा उतरना है, तो वह सुखी हो सकता है, यदि उन पर व्यक्ति उत्तीर्ण नहीं होता है, वह निश्चित रुप से अशान्त, चिंतित, भयभीत, दुःखी रहता है, चाहे बाह्य लक्षणों से दिखाई न दे।
- प्रेय मार्ग के पथिक, चाहे पश्चिम में हों या पूर्व में या अपने देश में, ये बिना श्रेय मार्ग के सिद्धान्त शैली को अपनाये पूर्ण सुखी हो ही नहीं सकते हैं, चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति क्यों न कर लेवें। सच्चे ईश्वर तथा ईश्वराज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति, असामान्य/प्रतिकूल

thearyasamaj.org

परिस्थितियों में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्ति/परिवार/समाज/राष्ट्र का अहित करने को समुद्यत हो जाता है। जिन मनुष्यों को अन्तःकरण में ईश्वर के अस्तित्व का बोध नहीं होता है, अथवा जो शब्द प्रमाण वा अनुमान प्रमाण से ईश्वर को स्वीकारते तो हैं, किन्तु व्यवहार में ईश्वराज्ञा के विरुद्ध आचरण करते हैं, उनकी भी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश विलुप्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति बुरे कामों को करते समय ईश्वर की ओर से भय, शंका तथा लज्जा-स्रूप संकेतों का ग्रहण नहीं कर पाते है और वे स्वच्छंद होकर, निर्लज्ज होकर, पाप-अपराधों को करते रहते हैं।

० हे परमेश्वर ! हम अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को देखकर खिन्न होते हैं, घृणा-ग्लानि करते हैं, किन्तु इससे क्या लाभ ? जब आत्म निरीक्षण करते हैं तो स्वयं में भी अनेक अवगुण दिखाई देते हैं। अवगुण न हों या न्यून हों, पिर भी अन्यों के दोषों को दूर करने का साहस, उत्साह, पराक्रम हमारे में नहीं है। ये साहस, बल, पराक्रम आदि गुण तब तक पूर्णरुप से नहीं उभरेंगे, जब तक हम स्वयं दोष रहित नहीं होंगे। इसलिए अब तो हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि सर्वप्रथम हमारे समस्त दुर्गुणों को विनष्ट कर दो और समस्त भद्रगुणों से हमें परिपूर्ण कर दो। तब आपके विशेष ज्ञान-बल-सामर्थ्य से युक्त होकर न केवल अपने आर्यावर्त की, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अवैदिक परम्पराओं को समाप्त करके, उनके जीवन पर विशुद्ध वैदिक शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान आचार-विचार वाली गौरवमयीं-अस्मिता की स्थापना करने में समर्थ हो जायेंगे और आपका कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का आदेश पूरा कर देंगे, इसी आशा व विश्वास के साथ।

---

ज्वलन्त प्रश्न

# "मुआवजा"

आज तक ये बात मेरी समझ में नहीं आई कि बलात्कार की भी श्रेणियाँ होती है बलात्कार के भी अलग-अलग प्रकार होते हैं। यदि नहीं तो क्या वजह है कि जब समाचार-पत्र पत्रिकाओं, टी.वी. चैनलों में बलात्कार पीड़ित महिला को उसकी जाति-धर्म से जोड़कर देखा, लिखा जाता है। बलात्कार करने वाला बलात्कार करने से पहले ये तो नहीं पूछता होगा कि तुम्हारी जाति धर्म क्या है ? फिर क्या कारण है कि मीडिया बलात्कार पीड़िता महिला की खबर के साथ उसकी जाति का उल्लेख करता है फिर क्या उच्च या अन्य जाति की महिलाएं दुष्कर्म का शिकार होने पर क्यों नहीं छपता की ब्राह्मण, क्षत्रिय, जैन महिला के साथ बलात्कार। हमेशा यही क्यों छपता है दलित महिला आदिवासी महिला के साथ बलात्कार। मीडिया की सनसनी है या किसी जाति विशेष को अपमानित करने का तरीका। जो भी हो हर हाल में अपमानित तो स्त्री ही होती है। क्या सरकार तक ये संदेश पहुंचाने का तरीका है, कि आपके तमाम नियम कानून ताक पर रखकर दुष्कर्म जारी है और सरकार जैसे ही दलित, आदिवासी सुनती है फौरन मुआवजा बांटना शुरु कर देती है। इससे क्या महिला अपराध काम होंगे या मुआवजे के लोभ में निर्दोषों पर मुकदमें कायम होंगे।

वोटों की राजनीति, मीडिया की टी.आर.पी. आखिर कब तक ? क्या ये अपमानित करने का तरीका नहीं है। यदि जाति का उल्लेख जरुरी है तो अन्य वर्गों की महिलाओं के साथ इनकी जाति क्यों नहीं आती। क्या उच्च-निम्न वर्ग की महिलाओं के साथ दुष्कर्म में अन्तर होता है कि उच्च के साथ हो तो कुछ नहीं हुआ। कोई राहत नहीं और निम्न के साथ हो तो बलात्कार। फिर बहुजन के नेता ऊँची राहत राशि देकर अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं। क्या बलात्कार, पीड़िता के लिए न्याय के नाम पर राशि बांटना भद्दा मजाक नहीं है। कब तक ये तमाशा चलता रहेगा। आखिर कब तक ? क्या बलात्कारी से पूछा गया कि तुम किस जाति, धर्म के हो और क्या तुमने सामने वाली से बलात्कार जाति पूछकर किया था। हो सकता है कि बलात्कार करने वाला भी उसी धर्म-जाति का हो। तो क्या उसके लिए कम या अधिक सजा या क्षमा आदि का नियम है। अगर नहीं तो यही प्रश्न है कि पीड़ित महिला के साथ उसकी जाति का उल्लेख क्यों ?

***- देवेन्द्र कुमार मिश्रा, पाटनी कालोनी, भरतनगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 480001***

thearyasamaj.org

प्रेरक व्यक्तित्व

२३ दिसंबर
बलिदान
दिवस

# श्रद्धा से सुने सत्संग ने ही बनाया-मुंशीराम को "श्रद्धानन्द"

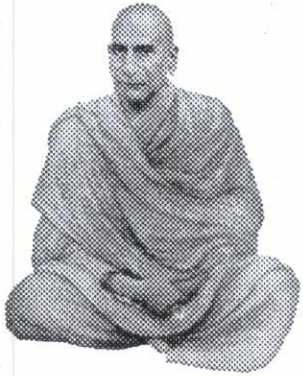

- विनोद बंसल

मानव जीवन में कब और क्या उतार चढ़ाव आएंगे और उनका क्या प्रतिफल होगा कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। राजा से रंक व रंक से राजा बनते हुए तो बहुत देखे हैं किन्तु एक ऐसे व्यक्ति को, जो व्यभिचारी व मदिरा में आकंठ डूबा रहता हो, को प्रकाण्ड विद्वान् संत व समाज सुधारक बनते हुए शायद ही कभी सुना होगा। मानव जीवन में कभी कभी ऐसे अवसर भी आते हैं जब मात्र एक सत्संग से ही व्यक्ति का जीवन बदल जाता है। काशी विश्वनाथ मंदिर के कपाट सिर्फ रीवां की रानी हेतु खोल कर, साधारण जनता के लिए बन्द किए जाने तथा एक कैथोलिक पादरी के द्वारा किए गए व्यभिचार का दृश्य देख मुंशी राम का विश्वास धर्म से उठ गया और वे बुरी संगत में पड़ गए। किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती के बरेली में हुए एक ही सत्संग ने उन्हें जीवन का जो अनमोल आनंद दिया उसे न सिर्फ उन्होने स्वयं अनुभव किया बल्कि सारे संसारको वितरित किया।

स्वामी श्रद्धानन्द उन महापुरुषों में से एक थे जिनका जन्म ऊंचे कुल में होने के बावजूद प्रारंभिक जीवन बुरी लतों के कारण बहुत ही निकृष्ट किस्म का था। बचपन के बृहस्पति, मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द तक का सफर पूरे विश्व के लिए प्रेरणा दायी है। श्रावणी १४ सम्वत् १९३६ को स्वामी दयानन्द सरस्वती से बरेली में हुई एक भेंट तथा पत्नी के पतिव्रत धर्म तथा निश्छल निष्कपट प्रेम व सेवाभाव ने उनके जीवन को क्या बना दिया।

समाज सुधारक के रुप में उनके जीवन का अवलोकन करें तो पाते हैं कि प्रबल विरोध के बावजूद स्त्री शिक्षा के लिए उन्होने अग्रणी भूमिका निभाई। स्वयं की बेटी अमृत कला को जब उन्होने **"ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल"** गाते सुना तो उनके कान खड़े हो गए। इस ओर पहल करते हुए घर घर जाकर चंदा इकट्ठा कर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना कर अपने बेटे हरिश्चंद्र और इंद्र को सबसे पहले भर्ती करवाया।

स्वामी जी का विचार था कि जिस समाज और देश में शिक्षक स्वयं चरित्रवान नहीं होते उसकी दशा अच्छी हो ही नहीं सकती। उनका कहना था कि हमारे यहां टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, प्रिंसीपल हैं, उस्ताद हैं, मौलवीं है पर आचार्य नहीं हैं। आचार्य अर्थात् आचारवान् व्यक्ति की महती आवश्यकता है। चरित्रवान् व्यक्तियों के अभाव में महान से महान व धनवान से धनवान राष्ट्र भी समाप्त हो जाते हैं। वे स्वयं लिखते हैं कि **"मैंने भी उसी विद्यालय में शिक्षा पाई थी, जिसने हिन्दू युवकों को अपनी प्राचीन संस्कृति का शत्रु बना दिया था।"**

जाति-पांति व ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाकर समग्र हिन्दू समाज के कल्याण के लिए उन्होने अनेक कार्य किए। प्रबल सामाजिक विरोधों के बावजूद अपनी बेटी अमृत कला, बेटे हरिश्चन्द्र व इंद्र का विवाह जाति-पांति के समस्त बंधनों को तोड़ कर कराया। उनका विचार था कि छूआ-छूत के कारण हमारे देश में अनेक जटिलताओं ने जन्म लिया है तथा वैदिक वर्ण व्यवस्था के द्वारा ही इसका अंत कर अछूतोद्धार संभव है।

वे हिन्दी को राष्ट्र भाषा और देवनगरी को राष्ट्र लिपि के रुप में अपनाने के पक्षधर थे। सतधर्म प्रचारक नामक पत्र उन दिनों उर्दू में छपता था। एक दिन अचानक ग्राहकों के पास जब यह पत्र हिन्दी में पहुंचा तो सभी दंग रह गए, क्योंकि

thearyasamaj.org

उन दिनों उर्दू का ही चलन था और स्वामी जी हिन्दी केप्रचार-प्रसार को राष्ट्रीय एकता के मूलमंत्र के रुप में देखते थे।

त्याग व अटूट संकल्प के धनी स्वामी श्रद्धानन्द ने १८६८ में यह घोषणा की कि जब तक गुरुकुल के लिए तीस हजार रुपये इकट्ठे नहीं हो जाते तब तक वे घर में पैर नहीं रखेंगे। इसके बाद उन्होने शिक्षा भिक्षा की झोली डालकर न सिर्फ घर-घर घूम चालीस हजार रुपये इकट्ठे किए बल्कि गुरुकुल कांगड़ी में ही डेरा डालकर अपना पूरा पुस्तकालय, प्रिंटिंग प्रेस तथा जालंधर स्थित कोठी भी उस पर न्यौछावर कर दी।

उनका अटूट प्रेम व सेवाभाव अविस्मरणीय है। गुरुकुल में एक ब्रह्मचारी के रुग्ण होने पर जब उसने उल्टी की इच्छा जताई तब स्वामी जी द्वारा स्वयं की हथेली में उल्टियाँ को लेते देख सभी हतप्रभ रह गए। ऐसी सेवा और सहानुभूति भला और कहां मिलेगी ?

स्वामी जी ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना कर दो लाख से अधिक मलकानों की शुद्धि कर वापस अपने स्वधर्म (हिन्दू) में लौटाया। स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि अज्ञान, स्वार्थ, प्रलोभन व उत्पीड़न के कारण धर्मान्तरण पर बिछुड़े स्वजनों की शुद्धि करना देश को मजबूत बनाने के लिए परम आवश्यक है। एक बार शुद्धि सभा के प्रधान को उन्होंने पत्र लिख कर कहा कि "अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं।"

वे निराले वीर थे। लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने एक बार कहा था कि स्वामी श्रद्धानन्द की याद आते ही १९१९ का दृश्य आंखों के आगे आ जाता है। सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोल कर आगे आते हैं और कहते हैं - "लो, चलाओ गोलियाँ। इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं होगा।" महात्मा गांधी के अनुसार वे वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शैया पर नहीं, परन्तु रणांगन में मरना पसंद करते हैं। वे वीर के समान जिए तथा वीर के समान मरे। महात्मा गांधी से ही उनको महात्मा मुंशीराम का नाम मिला।

राष्ट्र धर्म को बढ़ाने के लिए वे चाहते थे कि प्रत्येक नगर में एक हिन्दू-राष्ट्र मंदिर होना चाहिए, जिसमें पच्चीस हजार व्यक्ति एक साथ बैठ सकें और वहां वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि की कथा हुआ करे। मंदिर में अखाड़े भी हो जहां व्यायाम के द्वारा शारीरिक शक्ति भी बढ़ाई जाए। प्रत्येक हिन्दू राष्ट्र मंदिर पर गायत्री मंत्र भी अंकित हो।

देश की अनेक समस्याओं तथा हिन्दोद्धार हेतु उनकी एक पुस्तक "हिन्दू सोलिडेरिटी-सेविय ऑफ डाइंग रेस" अर्थात् "हिन्दू संगठन-मरणोन्मुख जाति का रक्षक" आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही है। राजनीतिज्ञों के बारे में स्वामी जी का मत था कि भारत को सेवकों की आवश्यकता है, लीडरों की नहीं। धोखे से अब्दुल रशीद नामक एक मुस्लिम धर्मान्ध युवक की गोलियों ने २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी जी की अद्भुत जीवन लीला को हमेश के लिए समाप्त कर दिया। वे उस समय स्वास्थ्य लाभ के लिए गुरुकुल में विश्राम कर रहे थे।

कहा जाता है कि सत्संग में बड़ी शक्ति होती है। श्रद्धा व विश्वास से सुना सत्संग किस प्रकार एक नास्तिक को आस्तिक व व्यभिचारी को सदाचारी बना देता है, यह स्वामी श्रद्धानन्द की जीवन लीला से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। वे सच्चे अर्थों में एक तपस्वी व निष्काम कर्मयोगी थे, जो भोगी से योगी बने और राष्ट्र की सेवा के लिए तिल-तिल कर जले। उन्होंने देश व समाज को जो कुछ दिया वह चिरकाल तक विश्व को मार्गदर्शित करता रहेगा।

**बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है, अपना समय और अच्छे संस्कार। ध्यान रखें एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ विद्यालयों को बनाने से भी बेहतर है।**

- सम्राट विक्रमादित्य-

thearyasamaj.org

पुण्य स्मरण

# अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल

जगतराम आर्य

१६ दिसंबर सन् १९२७ ई. सोमवार प्रातः साढ़े छः बजे गोरखपुर जेल से फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठा। ***"मालिक तेरी रजा और तू ही तू रहे, बाकी न मैं रहूं मेरी आरजू रहे। जब तक कि तन में जान, रगो में लहू रहे तेरा ही जिक्र या तेरी ही आरजू रहे।"*** तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की- "मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।"

इसी प्रकार १६ दिसंबर १९२७ को उन्होंने लिखा : "हे ईश ! भारतवर्ष में शत् बार मेरा जन्म हो,कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।" यह शहीद थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फांसी पर चढ़ गए देश के चरणों पर उत्सर्ग हो गए। वे सच्चे देशभक्त थे, साहसी थे, आर्यवीर थे। वे देश के चरणों पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भांति उदित हुए थे। एक तारे की भांति ही ये टूट गए। उनकी उदय और अन्त की कहानी एक मंत्र की तरह प्रेरक है, शक्तिदायक है। युग आएंगे और चले जाएंगे पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी, सदा एक पवित्र मंत्र की तरह रगों में शांति का संचार करती रहेगी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म २१ जून १८९७ को पं. मुरलीधर तिवारी (शाहजहांपुर निवासी) के यहाँ हुआ था। मुरलीधर ऊंचे डीलडौल के व्यक्ति थे। बिस्मिल जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हें एक मौलबी साहब पढ़ाया करते थे। पर उनका मन पढ़ने लिखने में बिल्कुल नहीं लगता था। वे बड़े उदंड थे। न स्वयं पढ़ते, न दूसरों लड़कों को पढ़ने देते थे। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते गए, उनकी उद्दंडता भी बढ़ती ही गई। कभी-कभी अपनी बुरी आदतों के कारण उन्हें अपने पिता के द्वारा अधिक दंडित भी होना पड़ता था। पर संयोग की बात, एक दिन बिस्मिल जी के गांव में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोड़कर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे, प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाज विद्वानों के उपदेश सुनने लगे। आर्यसमाज मंदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय, दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगंठित हो गया। उनके शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति का सागर उमड़ने लगा। उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी, और साइकिल चलाने में अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौड़ने और पैदल चलने में वे बड़े तेज थे। साठ-साठ मील तक पैदल चले जाते थे, पर उनमें नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भांति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वे देश की बातें सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय में भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तों के चरित्र पढ़ने लगे, देशप्रेम से भरी हुई कविताओं का पाठ करने लगे। वे जब कविताओं का सस्वर पाठ करने लगते, तो वातावरण में एक रस सा पैदा हो जाता था। बिस्मिल जी को ऊंची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होंने सामान्य रुप से उर्दू और अंग्रेजी पढ़ी थी। उन्होंने एन्ट्रेस की परीक्षा तो नहीं पास की थी, पर एन्ट्रेस तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होंने स्वतंत्र रुप से पढ़कर बाद में उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू में वे शायरी करते थे। उनकी कविताएँ बड़ी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थी। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की। उर्दू और अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्हें बंगला और हिन्दी का भी

thearyasamaj.org

ज्ञान था। ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय में देश प्रेम का अंकुर फूटा। जिन दिनों वे नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्हें स्वयंसेवक के रुप में सेवा समिति में काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति कार्य करते हुए उनकी दृष्टि परसेवा की ओर आकर्षित हुई। देश की गुलामी से उनके हृदय में दर्द पैदा होने लगे। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुःख देश का दुःख अंग्रेज सरकार के कारण है। फलतः वे अंग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध में सोच विचार करने लगे। इन्हीं दिनों बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेंदालाल दीक्षित से क्रांतिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनों केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, पर वे इसी कच्ची उम्र में ही दीक्षित जी के दल में सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यों में से बन गए। बंगाल के क्रांतिकारियों से भी उन्होंने संपर्क स्थापित किया। वे बड़ी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियों के लिए अस्त्र-शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र-शस्त्र और धन संग्रह के संबंध में कई रोचक और साहसपूर्ण कहानियाँ कही जाती है। बिस्मिल जी डकैतियों के द्वारा दल के लिए धन एकत्र किया करते थे। वे सरकारी खजानों, डाकखानों और बैंकों को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होंने १९२५ ई. में ९ अगस्त को काकौरी में ट्रेन डकैती करके अपने अद्भुत साहस का परिचय दिया था। काकारो लखनऊ के पास एक स्टेशन है। १९२५ ई. की ९ अगस्त का दिन था। संध्या के लगभग ८ बजे रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले से ही अपने साथियों से विचार-विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी यद्यपि यह सारा काम बड़ी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया, फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरुप गिरफ्तारियां की जाने लगी। एक-एक करके ट्रेन डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी २५ दिसंबर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथियों पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी के पहले बिस्मिल जी के माता-पिता जेल में उनसे मिलने के लिए गए। माता-पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मां को देखा, तो उनकी आंखे डबडबा गई। अश्रु बूंदे रह-रहकर आंखों से टपकने लगी। बिस्मिल जी की आंखों में अश्रु बूंदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं - मैं समझती थी, तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आंसू बहाकर अब अंतिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो। इस कायरता से क्या होगा? तुम्हें वीर की तरह हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा करना था। उसके बाद तुम देश की चीज बन गए थे, सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुःख नहीं है। बिस्मिल जी अपनी मां के ओजस्वी शब्दों को सुनकर चुप न रह सके। वे आंसू पोंछते हुए बोल उठे - "माँ, तुम मेरी मां हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकी। माँ, मैं मृत्यु से भयभीत होकर नहीं रो रहा हूँ। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है उसी प्रकार मां, तुम्हें देखकर मेरी आंखों से कुछ अश्रु बूंदे निकल पड़ी। विश्वास रखों मां, मैं मृत्यु से संतुष्ट हूँ, पूर्णरुप से सन्तुष्ट हूँ।" गोरखपुर जेल में १९२७ ई. की १९दिसंबर का प्रातःकाल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पड़े। उन्होंने शौचादि से निवृत्त होकर संध्या की हवन यज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फांसी के तख्ते की ओर चल पड़े। वे गुनगुनाते हुए ही फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्तेष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होंने फांसी के तख्ते पर चढ़कर जोर से आवाज ऊँची की - **"अंग्रेज सरकार का नाश हो, अंग्रेज सरकार का नाश हो।"**●

thearyasamaj.org

आरोग्य जगत्

# होमियोपैथी से कैंसर का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)

**कैन्सर**– कैन्सर रोगों का एक वर्ग है, जिसमें कोशिकाओं का एक समूह अनियंत्रित वृद्धि, रोग आक्रमण और कभी-कभी नासिका या रक्त के माध्यम से शरीर के अन्य भागों में फैल जाता है। अधिकांश कैन्सर एक गाँठ या अबुंद (ट्यूमर) बनाते हैं , लेकिन कुछ जैसे रक्त कैन्सर (ल्यूकेमिया) गाँठ नहीं बनाता है। चिकित्सा की वह शाखा जो कैन्सर के अध्ययन, निदान, उपचार और रोकथाम से संबंधित है, अन्कोलाजी या कैन्सर विज्ञान कहलाती है।

कैन्सर सभी लोगों को यहाँ तक कि भ्रूण को भी प्रभावित कर सकता है। कैन्सर ट्यूमर का बढ़ना जारी रहता है, किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता और जब रोग का पता चल जाता है तो पाण बचाना भी मुश्किल हो जाता है, इस बीमारी का नाम सुनकर रोगी भयभीत हो जाता है। यदि कैन्सर होने का पता शुरुआत में ही लग जाये तो रोगी को होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति से बचाया जा सकता है।

अधिकांश कैन्सर रोगों का इलाज किया जा सकता है। यह कैन्सर के विशेष प्रकार, स्थिति और अवस्था पर निर्भर करता है एक बार लक्षणों द्वारा निदान हो जाने पर कैन्सर का उपचार होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति के द्वारा रोगी को ठीक किया जा सकता है।

**कैन्सर के प्रकार :–**

१. **कर्सिनोमा** : स्तन, प्रोस्टेट, फेफड़े और बड़ी आंत का कैन्सर हो जाना।

२. **सार्केमा** : संयोजी ऊतक या मध्योतक कोशिकाओं से व्युत्पन्न दुर्दम गाँठ।

३. **लिंकोमा और रक्त कैन्सर (ल्यूकेमिया)** : रक्त बनाने वाली कोशिकाओं से उत्पन्न होती है।

४. **जनन कोशिका गाँठ** : व्यस्कों में अक्सर शुक्रग्रन्थि और अण्डाशय में पाया जाता है। भ्रूण बच्चों और छोटे बच्चों में पाया जाता है।

५. **ब्लास्टोमा** : जो एक अपरिपक्व या भ्रूणीय ऊतक के समान होती है।

६. **यकृत (लीवर) का कैन्सर** : हिपेटोकार्सिनोमा और वसा, कोशिकाओं का कैन्सर लिपोसार्कोमा कहलाता है।

**लक्षण** :- ट्यूमर, खून बहना, दर्द, अल्सर का निर्माण, आसपास के ऊतको में संमपीड़न की वजह से पीलिया जैसे लक्षण हो सकते हैं, आँखों और त्वचा का पीलापन, लसिका का बढ़ जाना, खाँसी और लीवर का आकार में बढ़ना, हड्डी में दर्द, अस्थियों का टूटना आदि। वजट घटना, भूख में कमी, थकान, अत्यधिक पसीना आना, रात को अधिक पसीना आना, रक्ताल्पता, थेम्बोसिस हार्मोन परिवर्तन, पित्ताशय के स्थान पर दर्द व सूजन।

**कैन्सर पैदा करने वाले कारण** :- इस रोग की उत्पत्ति शारीरिक तथा मानसिक कारणों से होती है। उदाहरणार्थ, शराब, सिगरेट पीने, तम्बाखू खाने तथा पान खाने, किसी जगह गहरी चोट लगने से कैन्सर हो सकता है, ये सब शारीरिक कारण है। इसी प्रकार शोक, दुःख, चिन्ता, काम धंधे में हानि आदि मानसिक कारणों से यह रोग हो सकता है। इस युग में ये कारण बढ़ते जा रहे हैं, इसलिए यह इस युग का रोग भी कहा जा सकता है। यह रोग वंशानुगत भी हो सकता है। बीसवीं शताब्दी में इस रोग ने इतना उग्र रुप धारण कर लिया है कि लगभग १५ प्रतिशत व्यक्तियों की मृत्यु कैन्सर से होती है।

**उपचार** :- ब्रेन ट्यूमर, मुख का कैन्सर, स्तन, (ब्रेस्ट) युटुस (गर्भाशय), गुर्दा कैन्सर, छाती का कैन्सर, गले का कैन्सर, पेट का कैन्सर का इलाज कर सफलता पायी है तथा होमियोपैथी पद्धति द्वारा कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

**कैन्सर के दुष्प्रभावों पर नियंत्रण** :- कैन्सर रोगों में होमियोपैथी उपचार असरदायक है, इसके उपचार से रोगी

thearyasamaj.org

को आराम मिलता है तथा तनाव, अवसाद, बेचैनी का सामना करने में मदद करता है। अन्य लक्षणों में उल्टी, मुंह के छाले, बालों का झड़ना, अवसाद और कमजोरी जैसे दुष्प्रभावों को घटाता है। ये औषधियाँ दर्द को कम करती है, उत्साह बढ़ाती है और तन्दुरुस्ती का बोध कराती है, कैन्सर के प्रसार को नियंत्रित करती है और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। अनेक प्रकार के कैन्सर जैसे गाल, जीभ, भोजन नली, पाचक ग्रन्थि, मलाशय, अण्डाशय, गर्भाश्य, मूत्राशय, ब्रेस्ट और प्रोस्टेट ग्रन्थि के कैन्सर में कारगार एवं उपयोगी पाई गयी है। चूंकि होमियोपैथी उपचार चिकित्सा का संपूर्ण तंत्र है। यह तंत्र केवल अकेली बीमारी को नहीं बल्कि व्यक्ति को संपूर्ण रुप से देखता है। ये औषधियाँ सुरक्षित मानी गयी है।

कैन्सर के उपचार के लिए वनस्पति, जानवर, खनिज पदार्थ और धातुओं से प्राप्त लगभग २०० से अधिक होमियोपैथी औषधियाँ उपयोग में लाई जाती है। जैसे - एनाकारडियम, एरसिनम, जबोराण्डी, एम्मोमिआकार्व, अस्टाकस, हेलोडर्मा, ग्रिन्डेलिया, सोरिनम आदि।

**प्रमुख होमियो औषधियाँ :-** कैलकैपलोर, हाईड्रेस्टिस, फाइटोलैम्का, आर्स, आयोड, कासिनोसीन, कोनायम, एसिड, नाइट्रिक, सेम्पर वाइनम, अनिथोगैलम, कार्बेएनि, होआंगनन आदि औषधियाँ लक्षण के अनुसार प्रयोग में लायी जा सकती है। **होमियोपैथी का प्राण सूक्ष्म और शक्तिकृत है। अतः चिकित्सक को बीमारी के मूल कारणों को खोजकर संपूर्ण लक्षणों को मिलान कर चुनी हुई शक्तिकृत औषधि का प्रयोग करने से कोई भी जटिल से जटिल रोगों पर नियंत्रण एवं सफलता पायी जा सकती है।**

**भोजन तथा परहेज :-** <u>पथ्य :</u> कैन्सर से पीड़ित व्यक्ति को नीबू के रस से बनी शिकंजी बनाकर पीने, फलों का रस, कच्ची और हरी सब्जियां, टमाटर का रस, तरबूज, करेला, गाजर, अंगूर, केला, पालक, बन्द गोभी, किशमिश, सूखा मेवा, बादाम आदि के प्रयोग से कैन्सर होने की संभावना कम रहती है।

<u>अपथ्य :-</u> सुंगधित चीजें जैसे - प्याज, लहसून, लौंग, इलायची, चाय, कॉफी, कपूर, मसाले वाली व नशीली चीजें, नमक वसायुक्त चीजें, दूध, माँस व मछली, अण्डा, पनीर, डालडा, शराब और तम्बाखू आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारतमाता स्कूल के सामने, टाटीबंध, रायपुर (छ.ग.)

परममित्र मानव निर्माण संस्थान के सम्पूर्ण सहयोग से

**आर्यवीर दल प्रशिक्षण एवं युवा चरित्र निर्माण शिविर**

(स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर)

**दिनांक २३ दिसम्बर से २८ दिसम्बर २०१४ तक**

**स्थान : श्री जगन्नाथ उच्च. माध्य. विद्यालय, ऋषभतीर्थ दमाऊधारा (सक्ती)**

**शिविर सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क : ९४०६३९३५३८, ९७५३३८२२१७, ७०२४७०५१५०**

निवेदक : आचार्य, श्री जन्ननाथ उ.मा. विद्यालय, ऋषभतीर्थ, दमाऊधारा (सक्ती)

आयोजक : कैप्टन रुद्रसेन आर्य (दिल्ली), शिविराध्यक्ष : आर्यरत्न स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (आमसेना)

thearyasamaj.org

# गुदगुदी

✶ एक दुकानदार ने कोई डायरेक्टर संबंधी सूचना प्राप्त करने के लिए फोन १७८ नं. मिलाया। उधर से किसी युवती ने उत्तर दिया, मुझे खेद है, कृपया आप इस सूचना के लिए १७९ नं. मिलाए। दुकानदार ने नया नंबर मिलाया, बात होने पर उसे लगा कि यह स्वर उसी युवती का है। उसने कहा, अभी-अभी क्या आप से ही बात नहीं हुई थी।

जी हाँ, मैं ही थी। उत्तर मिला। क्या करूँ, आज दोनों का काम मैं ही देख रही हूँ।

✶ बस में बहुत भीड़ थी। एक यात्री भीतर आया और बोला, उफ् ! लगता है बस में जानवर भरे पड़े हैं। पास ही बैठा एक युवक बोला, जी हाँ, बस एक गधे की कमी थी, जो आपने पूरी कर दी।

✶ अध्यापिका ने कक्षा में प्रश्न पूछा - चैन्नई शहर का नाम चैन्नई क्यों पड़ा ? काफी देर कक्षा में सन्नाटा रहा। फिर एक बच्चे ने हाथ उठाया। अध्यापिका ने खुश होकर कहा, हाँ, शाबाश बताओ। छात्र ने कहा, चैन्न शहर में लोग अधिकतर लुंगी पहनते हैं और उसमें चैन नहीं होती, इसलिए शहर का नाम चैन्नई पड़ा।

✶ अपने छोटे भाई के जन्म की बात सुनकर राज उसे देखने अस्पताल गया। वहां उसने छोटे भाई को गोद में ले लिया। नवजात शिशु ने राज की गोद में पेशाब कर दिया। इस पर राज पास से गुजरती हुई नर्स से बोला, यह बच्चा लीक करता है, बदल कर दूसरा दो।

***- मनोज साहू, दुर्ग***

# महंगी दुनियां

- विनोद कुमार पण्डा

*हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल।*
*लड़के वाले मांगेगे अब दहेज में पेट्रोल॥*

☆

*अब किसी के घर में पैदा बेटी अगर हो जाए।*
*बाप बेचारा चिंता में ही जीते जी मर जाए॥*

☆

*गुनाह हो गया पैदा करना बेटी जग में प्यारे।*
*दहेज का कुत्ता हाथी बन गया इस महंगाई के मारे॥*

☆

*बाप का सीना फट जाए जब घर में बजेगा ढोल।*
*हो गई दुनियां महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥*

☆

*धनी तो मरता धन के ऊपर गरीब का बुरा हाल।*
*मर गए लाखों भूखमरी से जब मिली ना रोटी दाल॥*

☆

*जीवन भर कड़ी धूप में करके मेहनत और मजदूरी।*
*कर ना पाए अपने घर की सारी जरुरत पूरी॥*

☆

*ऐसे कई लाचार शख्स ने पीया जहर का घोल।*
*हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥*

☆

*घर का चुल्हा जले अब कैसे गैस भी हो गई महंगी।*
*नेताओं की बल्ले-बल्ले जनता हो गई तंगी॥*

☆

*महंगी भिंडी महंगा आलू महंगे बैगन प्याज।*
*इतनी महंगी हो गई दुनियां मूल से महंगा ब्याज॥*

☆

*गरीब की सुनी थाली देख, नेता अब तो आंखे खोल।*
*हो गई दुनियां महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥*

*पता : मु. कंठीपाली (बरमकेला), जिला-रायगढ़ (छ.ग.)*

thearyasamaj.org



# वेद प्रचार में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के बढ़ते कदम

दुर्ग। विगत उपवेशन में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों ने यह अनुभव किया था कि समय-समय पर सभा द्वारा किए जा रहे प्रचारात्मक प्रयास वेदप्रचार की दिशा में पर्याप्त सफल नहीं हो पा रहे हैं, जबकि युवा निर्माण के प्रयास आर्यवीर दल शिविरों एवं शाखाओं के माध्यम से निरन्तर किए जा रहे हैं। पिछले कई वर्षों से स्थानीय आर्यसमाजों के नियमित कार्यक्रमों के अलावा सभा की ओर से जगह-जगह लगने वाले मेलों में भी वेदप्रचार के प्रशंसनीय प्रयास होते रहते हैं। हजारों की तादाद में वैदिक साहित्यों का वितरण एवं विक्रयण होता है, किन्तु निरन्तर वेदप्रचार की श्रृंखला चल नहीं पाती। इस बात पर एक राय होकर यह निर्णय लिया गया कि छत्तीसगढ़ निवासी स्वामी अशोकानन्द, श्री वासुदेव वेदश्रमी एवं श्री चतुर्भुज प्रभृति वेदप्रचारक सभा के पास उपलब्ध है, इसलिए उनका पर्याप्त समय हम ले सकते हैं, इसी योजना के तहत गत १७ अक्टूबर से व्यापक प्रचार की कार्ययोजना **"योग साधना चिकित्सा व चरित्र निर्माण शिविर"** की एक श्रृंखला चलाई गई, जिसमें हजारों छात्र-छात्राओं को योग के विविध आसनो का प्रशिक्षण दिया गया, विद्वानों के द्वारा देश, धर्म, समाज के प्रति दायित्व बोध का प्रशिक्षण दिया गया। वर्तमान समस्याओं का क्या समाधान है, इस पर युवा शक्ति को प्रेरित किया गया।

**दिनांक १७-१०-२०१४ से ३१-१०-२०१४ तक महासमुन्द जिले के निम्न स्थानों पर योग साधना चिकित्सा एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न हुए :-**

(१) दिनांक १७-१०-२०१४ को सरस्वती शिशु मन्दिर उ.मा. विद्यालय बसना, शास. कन्या उ.मा. विद्यालय बसना में सम्पन्न हुआ।

(२) दिनांक १८-१०२०१४ को शास. उ.मा. विद्यालय गढ़भुलझर में एवं बुनियादी उ.मा. विद्यालय तोषगांव में सम्पन्न हुआ।

(३) दिनांक १९-१०-२०१४ को ग्राम पलसापाली बसना में सन्पन्न हुआ।

(४) दिनांक २०-१०-२०१४ ग्राम नानकसागर बसना में सम्पन्न हुआ।

(५) दिनांक २१-१०-२०१४ को ग्राम बिछिया बसना में सम्पन्न हुआ।

(६) दिनांक २२-१०-२०१४ को ठाकुरपाली बसना में सम्पन्न हुआ।

(७) दिनांक २३-१०-२०१४ (दीपावली)को ग्राम नानकसागर बसना में सम्पन्न हुआ।

(८) दिनांक २४ एवं २५ अक्टूबर २०१४ को नवगड़ी बसना में सम्पन्न हुआ।

(९) दिनांक २७-१०-२०१४ को सरस्वती शिशु मंदिर गढ़फुलझर बसना, ग्राम बड़ेडामा बसना में सम्पन्न हुआ।

(१०) दिनांक २८-१०-२०१४ को ग्राम मोहिनीपुर विद्यालय, शास. उ.मा. विद्यालय पिरदा बसना एवं ग्राम पिरदा बसना में सम्पन्न हुआ।

(११) २९-१०-२०१४ को सरस्वती शिशु मंदिर पिरदा, ग्राम भरकरापाली एवं जोगीबहार बसना में सम्पन्न हुआ।

(१२) दिनांक ३०-१०-२०१४ को ग्राम कंदाबहाल, शास. उ.मा. विद्यालय भंवरपुर एवं ग्राम दुरगापाली बसना में सम्पन्न हुआ।

(१३) दिनांक ३१-१०-२०१४ को शास. उ. मा. विद्यालय एवं प्रायमरी विद्यालय दुरगापाली बसना, ग्राम कोलिहादेवरी में सम्पन्न हुआ।

**योग साधना चिकित्सा एवं चरित्र निर्माण शिविर का आगामी कार्यक्रम विकासखंड सरायपाली में दिनांक १-११-२०१४ से बड़ेपंधी, छिबरा, सिरपुर, किसमीसरार, सेमलिया, सरायपाली क्षेत्र में :- हायर सेकेण्डरी स्कूल सरायपाली, कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूल सरायपाली, हायर सेकेण्डरी स्कूल तोरसिंगा,**

thearyasamaj.org

हायर सेकेण्डरी स्कूल कलिंदा, हायर सेकेण्डरी स्कूल डौकीन, सरस्वती हायर सेकेण्री स्कूल सरायपाली, हायर सेकेण्डरी स्कूल सिंघनपुर सहित आसपास के ग्रामीणों क्षेत्रों में कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

संवाददाता - प्रभात आर्य

## आर्यसमाज धमतरी ने मनाया महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

**धमतरी।** दिनांक २३-१०-२०१४ को आर्यसमाज मंदिर में स्वामी दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस मनाया गया, जिसमें दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला गया और उनके विचारों को बताया गया और जीवन में उतारने हेतु प्रेरित किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन विचार एवं कार्य भी अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है। उन्होने ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं का पूजन, जन्मना, ऊंचा-नीचापन, सामाजिक छुआछूत, स्त्री शिक्षा का विरोध पर बल दिया। वे जीवन के विभिन्न व्यवहारों के संबंध में मार्गदर्शन करने वाले थे।

हवन सत्संग के कार्यक्रम में आर्यसमाज के अध्यक्ष श्री सत्यकाम आर्य, सचिव श्री अजय गोस्वामी, सदस्य श्रीमती रत्ना आर्य, पूर्व प्रधान पाठिका श्रीमती उषा सोनी, प्र. पाठिका श्रीमती मंदा बाबर, शिक्षिकाएं श्रीमती कृष्णा सोनी, श्रीमती अन्नपूर्णा नेताम, श्रीमती सीमा शिन्दे, कु. डिम्पल साहू, कु. प्रियंका गोस्वामी, कु. प्रियांसी गोस्वामी एवं छात्राएँ अन्य नागरिकगण उपस्थित थे।

*संवाददाता : अजय गोस्वामी, आर्यसमाज धमतरी*

## महिला आर्यसमाज जवाहर नगर ने मनाया महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस

**रायपुर।** स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का १३१ वाँ बलिदान दिवस मनाया गया। आर्यसमाज जवाहरनगर रायपुर ने महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का आयोजिक किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रथम चरण में परमपिता परमात्मा को स्मरण करते हुए लगभग ५० लोगों ने पवित्र वैदिक धर्म अग्नि में आहूति प्रदान की।

आर्यसमाज की मंत्राणी श्रीमती मंजूदेवी अशपल्या जी ने अपना संकल्प दोहराते हुये बताया कि आर्यसमाज जवाहर नगर कोशिश कर रहा है कि सभी पर्व आर्यसमाज के प्रांगण में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाए। आर्य पर्व हमारे चिंतन और विचारों को पवित्र करते हैं। आयोजित महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. अजय आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द केवल समाज सुधारक ही नहीं थे, बल्कि एक राष्ट्रवादी, ईश्वर भक्त और समाजसेवी के रुप में विश्व उन्हें हमेशा याद करता रहेगा। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज वह संस्था है जो समाज की कुरीति और कुप्रथा से टकराने की हिम्मत रखती है। दीपावली प्रकाश फैलाने का पर्व है। ज्ञान ही सच्चा प्रकाश है। इस आयोजन में अर्चना, तारादेवी, कांति मलेवार, संजय शुक्ल, शिवन गुप्ता, दीनानाथ वर्मा (सभा मंत्री), रामेश्वरी देवी प्रधान, तापेश्वर शर्मा एवं श्रीमती सुभाष श्रीवास्तव, विनोद जायसवाल, लालराम शर्मा, मनोज गुप्ता, दयाराम वर्मा सहित लगभग पचास लोगों ने इस आयोजन में भाग लिया।

*संवाददाता : मंजू अशपल्या, मंत्राणी, म.आ.ज.न.रायपुर*

## आर्य विद्वानों से अनुरोध

**प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव १६, १७, १८ फरवरी २०१५ को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता ३० दिसम्बर २०१४ तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख, वेद, स्वामी, दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जनोपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा। इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। सम्पर्क : अजय सहगल, सम्पादक टंकारा समाचार,** ए-४१९, डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-११००२४, चलभाष नं. ९८१००३५६५८

thearyasamaj.org

### अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामंत्री
## माता प्रेमलता शास्त्री को श्रद्धांजलि

**दुर्ग।** अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की महामंत्री माता प्रेमलता शास्त्री जी का दिनांक १ नवम्बर २०१४ रात्रि को आकस्मिक निधन हो गया है। वे लगभग ८५ वर्ष की थी। इस दुःखद समाचार से समूचे आर्य जगत को गहरा आघात पहुंचा है, क्योंकि माता जी स्व. पृथ्वीराज शास्त्री जी की मृत्यु पश्चात् लगभग २५ वर्ष से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से देश के पूर्वोत्तर आसाम, नागालैण्ड, उड़ीसा, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार गुरुकुल शिक्षण संस्थाएं एवं बालवाड़ियों की स्थापना करके बेसहारा आदिवासी बच्चों को निरन्तर शिक्षित करने का कार्य कर रही थीं।

उनके निधन से आर्यसमाज एवं राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई है। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों तथा अग्निदूत परिवार की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें। *-निज संवाददाता*

## -: श्रद्धांजलि :-
## प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

**कलकत्ता।** आर्यसमाज विधान सरणी कलकत्ता के मुखपत्र आर्य संसार के ख्यातिलब्ध सम्पादक प्रो. उपाकान्त उपाध्याय जी का ८७वाँ कर्ष की आयु में गत २ नवम्बर २०१४ को उनके निवास स्थान कलकत्ता में प्रातः ५ बजे निधन हो गया। वे गत कई महीनों से रोग शय्या पर पड़े थे। दो दिन बाद ही उनका जन्म दिन मनाया जाना था।

आर्य पत्रकारिता व लेखन क्षेत्र में प्रो. उपाध्याय जी का मूर्धन्य स्थान प्राप्त था। वे वर्षों से आर्य संसार का सम्पादन विद्वतापूर्वक मनोयोग से करते आ रहे थे। मधुर व्यवहार और अतिथि सेवा में भी वे बजोड़ माने जाते थे।

उनके निधन से आर्यसमाज ने एक ऐसा रत्न खो दिया है जिसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं है। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों तथा अग्निदूत परिवार की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें।

*-निज संवाददाता*

## यज्ञ प्रेमी माँ नहीं रही..

**शोक समाचार :**

**नई दिल्ली।** अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्री हर्ष मुंजाल जी का निधन दि. ३-९-२०१४ को नई दिल्ली में हो गया। आप पिछले कुछ वर्षों से रूग्ण अवस्था में थी, लेकिन परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार आपने इस देह को त्यागा। आप श्री योगेश मुंजाल ट्रस्टी श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं ला. दीवानचन्द्र ट्रस्ट के अतिरिक्त अन्य कई शिक्षण संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी तथा सुप्रसिद्ध हीरो परिवार के प्रमुख सदस्य की धर्मपत्नी एवं महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जो कि विश्व की आर्य समाजों में चर्चित नाम है, की पुत्रवधु थी।

आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं और सारे दायित्वों से निवृत्त हो चुकी थी। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। दिनांक ६-९-२०१४ को हुई प्रार्थना सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य चन्द्रशेखर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। उपस्थित जनसमूह में आर्यजगत् के संन्यासीवृन्द एवं प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। ऐसी दिवंगत यज्ञप्रेमी माँ के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्‌गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहने करने की शक्ति मिले।

*संवाददाता : अजय सहगल, सम्पादक टंकारा समाचार*

thearyasamaj.org

## डी.ए.व्ही. पब्लिक स्कूल छाल में रक्तदान शिविर सम्पन्न

**छाल ।** डीएवी आंदोलन के सूत्रधार महात्मा हंसराज जी की पुण्य तिथि १५ नवम्बर को है, डीएवी कालेज प्रबंधकर्ता समिति १ से १५ नवम्बर २०१४ तक हंसराज पखवाड़ा मना रही है, इस अवसर पर संपूर्ण भारत में विशाल रक्तदान शिविरों का आयोजन किया है ।

इसी तारतम्य में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभ डीएवी संस्थान म.प्र. व छ.ग. प्रक्षेत्र १ व २ के क्षेत्रीय निदेशक श्री एस.के.राइ के मार्गदर्शन एवं प्राचार्य एल.के.पाढ़ी के नेतृत्व में डीएवी पब्लिक स्कूल एसईसीएल छाल द्वारा रेडक्रास सोसायटी रायगढ़ के सहयोग से दिनांक १० नवम्बर को प्रातः ११.०० बजे से ५ बजे तक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर में छालवासियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया । शिविर में रेडक्रास की ओर से बी.आर.पटेल, बसंत चौहान, राम किंकर तथा अमित कुमार कुंवर का सहयोग सराहनीय रहा । शाला के प्राचार्य एल.के. पाढ़ी ने समस्त रक्तदाताओं एवं रेडक्रास सोसायटी रायगढ़ के सदस्यों का रक्तदान शिविर को सफल बनाने हेतु उनका आभार व्यक्त किया ।

*संवददाता : प्राचार्य एल.के.पाढ़ी*

## डी.ए.व्ही. नन्दिनी ने दी २६/११ के शहीदों को श्रद्धांजलि

**नन्दिनी ।** दिनांक २६-११-२०१४ को सायंकाल ३ बजे डी.ए.व्ही. इस्पात पब्लिक स्कूल नन्दिनी माइन्स के विशाल प्रांगण में कक्षा ११वीं एवं १२वीं के छात्र-छात्राओं के साथ प्राचार्य सहित सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने २००८ में घटित आतंकी वारदात में शहीद हुये नागरिकों की याद में आतंकवाद के विरुद्ध एकजुटता पर केन्द्रित एक प्रतीकात्मक आकर्षक रंगोली के सामने सामूहिक मोमबत्तियाँ पर अपने संक्षिप्त श्रद्धांजलि समर्पित की ।

इस अवसर पर अपने संक्षिप्त उद्‌गार में विद्यालय के प्राचार्य श्री राजशेखर जी पालीवाल ने उपस्थित जनसमूह को आह्वान करते हुए कहा- शहीदों के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अपनी मातृभूमि की हिफाजत के लिए हर पल हर क्षण जागरुक रहे एवं अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार देश को खुशहाल बनाने प्रयत्नशील रहें ।

*संवाददाता : प्राचार्य, डी.ए.वी. स्कूल नन्दिनी माइन्स*

**जो ईश्वर वा किसी दूसरे पदार्थ के गुणज्ञान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना है, वह स्तुति कहाती है ।**

## अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे । जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें । इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें । अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा ।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें । **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं ।**

**अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं ।**

**- दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

**कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५**

thearyasamaj.org

# छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिले के विभिन्न स्कूलों व ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पन्न
## योग साधना चिकित्सा एवं चरित्र निर्माण शिविर की झलकियाँ

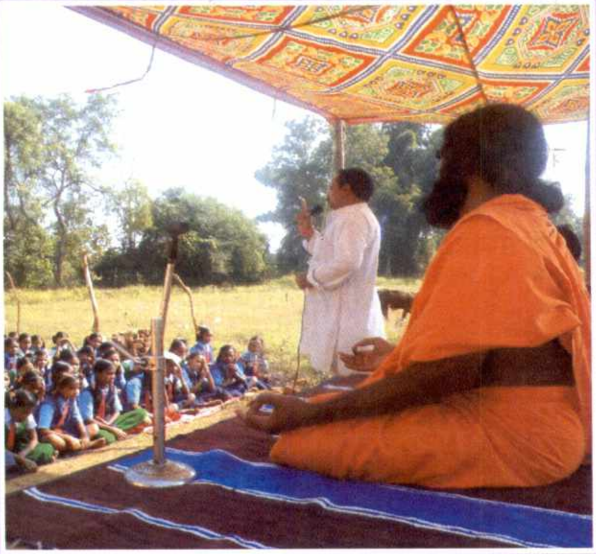
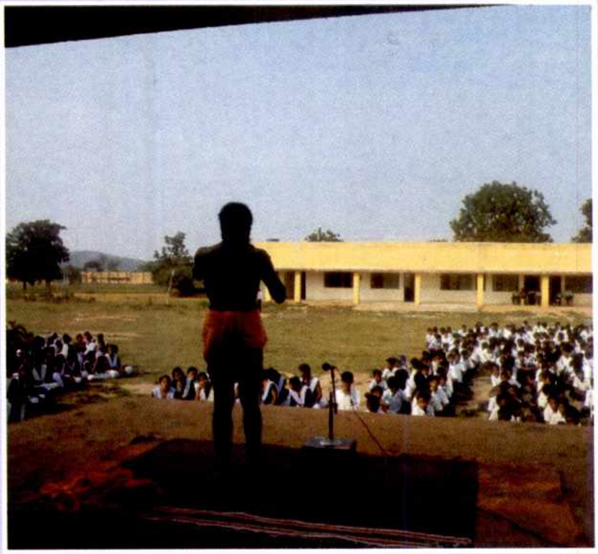
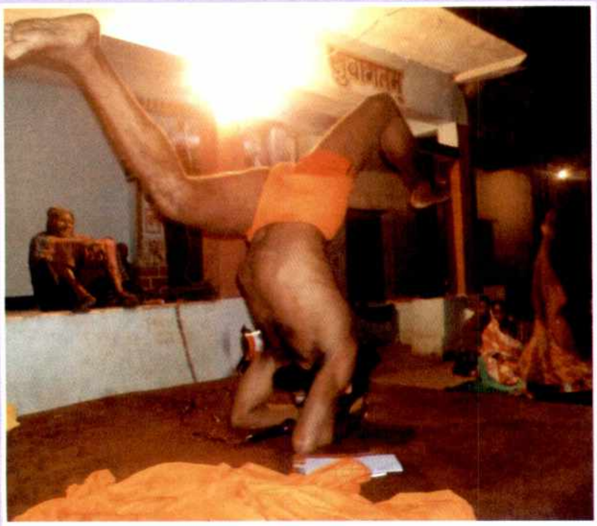
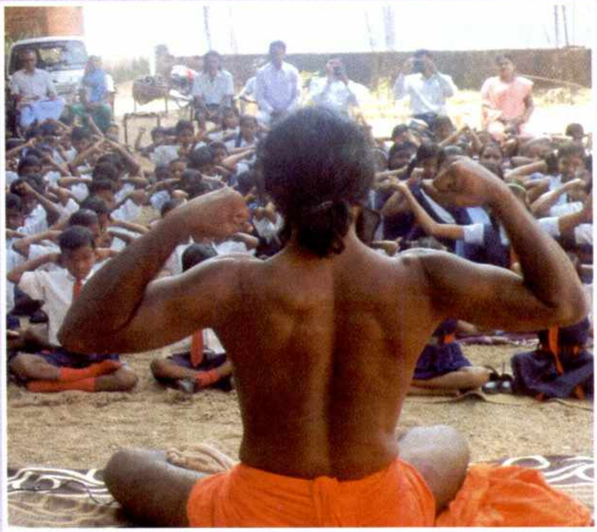

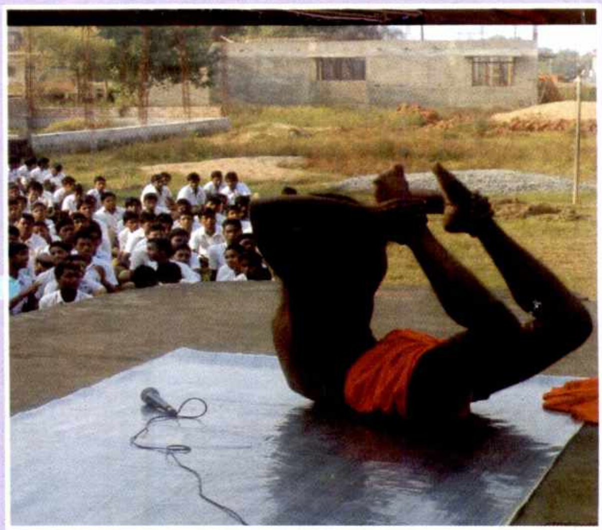

thearyasamaj.org

दिसम्बर 2014
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

प्रेषक :
**अग्निदूत,** हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

सेवा में,
श्रीमान्

# स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली के तत्वावधान में

: आयोजक :
डी.ए.वी. संस्थान म.प्र. व छ.ग. प्रक्षेत्र
विशेष सहयोग : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

## दिनांक 22 व 23 दिसम्बर 2014

### मुख्य आकर्षण
विश्वशांति महायज्ञ
(21 कुण्डीय वेद पारायण यज्ञ)
विशाल शोभा यात्रा
वैदिक प्रदर्शनी
वेद प्रवचन
वैदिक भजन संध्या
निर्धन कन्या विवाह
गर्म वस्त्र वितरण कार्यक्रम

**मुख्य अतिथि : श्री पूनम सूरी**
(प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)
**वैदिक प्रवचन : डॉ. वागीश शर्मा**
(अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता)
**ब्रह्मत्व : आचार्य अंशुदेव आर्य**
(प्रधान, छ.ग. प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा)

**स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल प्रांगण, हुडको, भिलाई**

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.